

9

ब ग्रह, लग्न, राशि, नक्षत्र

- 1) 12 राशियाँ - मेष, वृष, ...
- 2) 9 ग्रह - सूर्य, चंद्र, मंग, ...
- 3) 27 नक्षत्र - अश्विनी, भर, ...

नक्षत्र निकालने ->

मास समोदर पुरातन कार तिथि संयुक्त कार जोड़  
कृष्ण पक्ष में अश्विनी स्वाती शुक्ल से ले

6 घड़ी - लग्न

15 घड़ी - चरण

24 नक्षत्र 1 राशि

चन्द्र जिस नक्षत्र में होता है उसे ही उपर्युक्त नक्षत्र कहते हैं

चन्द्र राशि -> नक्षत्र की संख्या = राशि की संख्या

राशि ->	मेष वला	जुष इके	मिथुन	कर्क
नक्षत्र ->	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
नक्षत्रों प्रभा	पूर्वाषाढा	ज्येष्ठा	मूला	पुष्य
अश्वि	मृगशिरा	अर्द्रा	पूर्वाभाद्रपद	अश्लेषा
	पूर्वाषाढा	ज्येष्ठा	मूला	पुष्य

सिंह	मिथुन	तुला	वृश्चिक
मघा	पूर्वाभाद्रपद	उषा	हस्त
चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूला	पुष्य	अश्लेषा

धनु	मकर	कुम्भ	मेघ
मूला	पूर्वाभाद्रपद	उषा	हस्त
चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूला	पुष्य	अश्लेषा



4) लग्न →

मीने में वे मकर कुप तृद्वारे

चित द्वारे वृष कुम्भयो

मकर मितृने पंचमम्

शिव लब्धो वयो-पटी

सूर्योदय के समय सूर्य जिस लग्न में होता है उस उस समय में लग्न कहते हैं। (सूर्य की राशि के बारे में आगे है)

प्रत्येक लग्न रात में जाता है।

मेघ लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि -  $\frac{3}{30}$  घंटे

2 कुंघडी = 1 घंटा

60 घंटा = 1 घडी

60 घडी = 1 दिन



जैसे हमने 18 वैशाख को 6:45 पर सूर्योदय हुआ तो 18:46 पर 4वां लग्न होगा

वैशाख में सूर्य की राशि - मेघ

मेघ लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि -  $\frac{3}{30}$  घंटे

18

$$= \frac{3}{30} \times 18$$

$$= \frac{3}{30} \times 18 \times 2$$

8 घंटे

$$= \frac{3}{30} \times 2$$

$$= 36 \text{ मिनट}$$



संलग्न की कुल अवधि = 3 घंटी = 30 = 5 घंटे = 1 घंटा 12 मिनट

रात में = 36 मिनट

दिन में = 36 मिनट

6:45 पूर्ण जग्न - सूर्योदय -

7:21 रात लग्न सूर्योदय - मेघ

इसी प्रकार 18:46 पर लग्न - तुल्य

### 5) लग्न के आधार पर दिनमान

सूर्योदय से लग्न बाद सूर्योदय होता है।

वैशाख मास के प्रथम दिन दिनमान - 30 घंटी

ज्येष्ठ मास - 30 घंटी

वर्षा मास - 30 घंटी

⑥ 12 मास - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, सावन, भाद्र, अश्वि, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

### ② जन्म कुण्डली विचार

① जन्म कुण्डली में प्रथम भाव लग्न होता है।

② जिस राशि में चन्द्र होता है वह जातक की राशि होती है।

③ महादशा - अन्तर्दशा विचार

	सू०	च०	म०	तु०	गु०	शु०	रा०	र०	के०
दशा	6व०								
अन्तर्दशा	3व० 18								



4

### 3) ग्रह विचार -

सू०	राशि/पक्ष	मा०	सिंह	सिंह	मेष	तुला
च०	राशि/पक्ष	मा०	वृष	वृष	वृष	वृश्चिक
म०	राशि/पक्ष	मा०/वक्त्र	मेष/वृश्चिक	मेष	मकर	कर्क
बु०	राशि/पक्ष	—	कन्या, मिथुन	कन्या	कन्या	मीन
गु०	राशि/पक्ष	—	धनु, मीन	धनु	कर्क	मकर
शु०	राशि/पक्ष	—	तुला, वृष	तुला	मीन	कन्या
का०	राशि/पक्ष	—	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तुला	मेष
रा०	राशि/पक्ष	वक्त्र				
के०	राशि/पक्ष	वक्त्र				

१) भाते २) मार, व० ३) सारणी ४) मूल विचार ५) उच्च ६) नीच ७) मित्र

### ग्रह के नीचस्थ से स्वतंत्र भाव उत्पन्न

सू०	भाषिण्य				
च०	मातृ	7	3/10	5/12	7/12
म०	भूमा	7	3/10	5/12	7/12
बु०	पन्ना	7/4/8	3/10	5/12	—
गु०	पुस्तक	7	3/10	5/12	7/12
शु०	दीरा	7/5/9	3/10	5/12	7/12
का०	नीलम	7	3/10	5/12	7/12
रा०	गोमय	7/3/10	3/10	5/12	7/12
के०	वैदूर्य	7	3/10	—	7/12
	वैदूर्य	7	3/10	—	7/12

शत्रु १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२



विशेष रूप से प्रभावित काल दृष्टि का समय स्वयं प्रकाश प्रिया

	स्व	उच्च	नीच	मूलतः कार्य
मेष	मं०	सू०	श०	मं०
वृष	शु०	चं०	—	चं०
मिथुन	बु०	—	—	—
कर्क	चं०	गु०	मं०	—
सिंह	सू०	—	—	सू०
कन्या	बु०	सू०	श०	बु०
तुला	शु०	शनि	सूर्य	शु०
वृश्चिक	मं०	—	चं०	—
धनु	गु०	—	—	गु०
मकर	श०	मं०	शु०	—
कुम्भ	श०	—	—	श०
मेथुन	गु०	ब श	बु०	—



## भाव चक्र

प्रथम भाव → तन, शरीर | मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ - बलवान

द्वितीय भाव → धन, मित्र, घोडा, कोष, परिवार, आँख, ज्ञान, नाक, अश्वकार्य

तृतीय भाव → भाई, बहन, पराक्रम, साहस, दम, खाँसी, दास-कर्म, हाथ, आभूषण, दृष्ट

चतुर्थ भाव → घर, सुख, माता | कर्क मीन, मकर का उत्तराशु - बलवान | कारक-चंद्र, बुध

पंचम भाव → विद्या, मंतान, जुड़े यश | कारक-शुक्र - शुक्र

षष्ठ भाव → रोग, शत्रु, झगडा | कारक-शनि, मंगल, पशु, कुरकर्म, मौसी, लूना, लोह, तेल, लोहा

सप्त भाव → पति, विवाह | बलवान - वृश्चिक, वैदिक आभूषण, दही

अष्ट भाव → आयु, हृद्यु | कारक-शनि, गुप्त धन, ताऊ

नव भाव → धर्म | कारक-शुक्र, बुध, भाग्य, दीप्ता के संबंध

दशम भाव → कर्म, भोग, पिता | मेष, सिंह, वृष पूर्वाशु, धनु का उत्तराशु बलवान का उत्तराशु

एकादश भाव → लाभ | कारक-शुक्र, आय, आभूषण, पुत्र-वधु

द्वादश भाव → हानि | कारक-शनि, व्यय, दण्ड, रोग, शत्रु-विरोध, मोक्ष, चोर, या चोर

प्रथम भाव → जाति, आयु, दादी, नाता, सुख, दुख

तृतीय भाव - चाचा, मामा,

चतुर्थ भाव - ब्राह्म, भवान, मलहाय, नानी, पिता का धन, खेती

पंचम भाव - माते का सुख, नौकरी, भूमि, वध



① अग्निवास →

अन्य

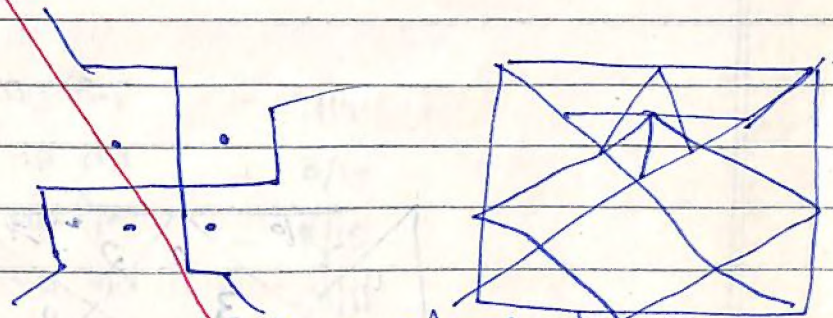
$\frac{\text{तिथि} + \text{वार} + 1}{4}$

यदि। वृत्ते स्वर्ग में अग्निवास पूर्णनाश

— 2 — पातल — अर्थनाश

— 3, 6 — पृथ्वी — सुखप्रद

② जन्म कुण्डली के शुक्र में →



ॐ श्री गणेशाय नमः एक दन्तो महा बुद्धि सर्व अज्ञो गणनायका  
सर्व सिद्ध करे देवा गौरी पुत्र सेनायका। जननी जन्म सोखय नमः वृद्धनी  
कुल सम्पदा। पदवी पूर्ण पुण्य नमः लिखते वृद्ध पत्रिका

③ गण्डमूल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती ये छः नक्षत्र  
गण्डमूल हैं।

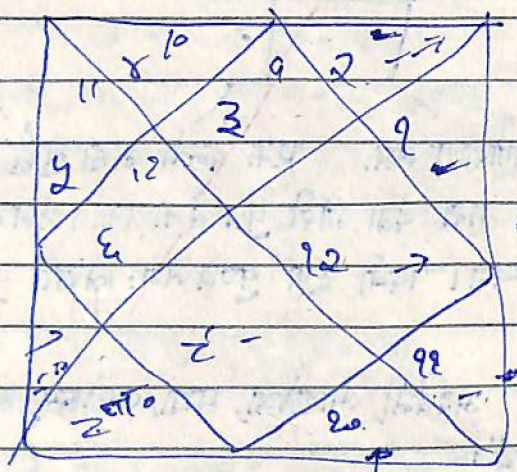
धरती सोई सूर्य सप्तमि से २, ७, ९, १०, २१, २४ धरती सोई  
सूर्य नक्षत्र से ५, ११, १२, १७, २६ धरती सोई होती है।

(५) पंचको- धनिष्ठा, शत, पूनमा, उभाद्र, रेव (अंतिम ५ नक्षत्र)

भूमि रास्वला ३ सू. सकांति के वि से १, २, ३, ११, १६, १८, १९ दिन धरती रहला।  
पञ्च, द्रव्य वृद्धि तालव, गृहमिदि काय आश्रम न रहे



8





9

(५) विवाह ~~के~~ ~~वर्ष~~ ~~का~~ ~~का~~ ~~का~~  
वर्तमान काल

(I) अमावस्या

(II) रिक्ता तिथि - ५/१/१५ चन्द्र तिथि -

(III) (क) चारवेला

दिन	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.	शं.
पहर	४	७	२	५	४	३	६

(IV) जन्म नक्षत्र

(V) पौष मास

(VI) श्रवण - मं, श, सू, क्रमशः अधि

(VII) भद्रा

कृष्ण पक्ष दिन

- ७/१५

कृष्ण पक्ष रात

- ३/१०

शुक्ल पक्ष दिन

- ४/१५

शुक्ल पक्ष रात

- ५/११

(VIII) तिथि मास नक्षत्र अत घटी - ५

(IX) तुलिन

दिन	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.	शं.
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

(X) भद्रा

शेष भकर वृष कर्कट स्वर्ग

(सुख)

(नाश-जात) मिथुन तुला कन्या धनुनाग

(द्रव्य लाभ)

मीन कुम्भ अलिकसर मृत्यु

(विनाश)

त्रिभुवन मध्ये भद्रा व्याप्तम्

पञ्चक दग्धा

(XI) चन्द्र तिथि

सू. सत्रांत

५	४	३	२	१	१२	११	१०
शेष	वृष	मिथुन	कर्क	मिह	कन्या	तुला	वृश्चिक



2	92	✓	2
धनु	मकर	कुम्भा	मीन

द्वितीये मीने धनु-च चतुर्श वृष कुम्भयो

षट मेष कर्कट च अष्टम मिथुने कन्या

वशात अहिकेश च द्वादश मकरे तुले (अहिकेश-वृश्चिक, मिथु)

एवेस्तु तिथि तदा दग्धा तिथि आसि

इमेकाक्षाय दश महादाय मो हे जिनामे वाचकावाचके

महत्त्वपूर्ण है

- |             |                |               |                    |
|-------------|----------------|---------------|--------------------|
| (i) लता     | (ii) पात       | (iii) युति    | (iv) वेध           |
| (v) नाभित्र | (vi) बुध पंचक  | (vii) एकार्गल | (viii) क्रांति मान |
| (ix) उपग्रह | (x) दग्धा तिथि |               |                    |

पंचक

धारया तिथर दश अष्ट वेदाः

12 15 10 8 4

यदि र तिथि को पंचक जानना है तो

(i)  $2+12=14 \div 9 = 5$  (पंचक)

(ii)  $2+15=17 \div 9 = 8$

(iii)  $2+10=12 \div 9 = 3$

(iv)  $2+8=10 \div 9 = 1$

(v)  $2+4=6 \div 9 = 6$



वर के ५/४/१२ सूर्य न हो  
 मन्वा के ५/४/१२ गुरु न हो



12

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

100







## (६) जन्म कुण्डली में ग्रह

14

- (1) ३, ६, ११ भाव पाप ग्रह शुभ
- (2) १, ४, ५, ७, ८, १० शुभ ग्रह अशुभ
- (3) ६, ८, १२ भाव के स्वामी जिन भावों में बैठते हैं वे भाव अनिष्टकारी (खराब) होते हैं।
- (4) ८ तथा १२ भाव में सभी ग्रह - अनिष्टकारक
- (5) किसी भाव का स्वामी - पाप ग्रह - वृत्तीय भाव - शुभ  
 - शुभ ग्रह - मध्यम
- (6) रा०, के०, अष्टमेश यहाँ बैठते हैं वहाँ बिगाड़ते हैं।
- (7) २, ३, ७ भाव - अकेला शुभ - अशुभ
- (8) बुध - ६ भाव - शत्रुनाश  
 शनि - ४ भाव - दीर्घायु  
 मंगल - १० भाव - भग्न निर्माण
- (9) पू० च०, उदित बुध, शु०, के, गु - क्रमशः एक दूसरे से अधिक शुभ  
 यदि ये शुभ ग्रह की राशि में हों तो - विशेष शुभ  
 पाप - अल्प शुभ
- (10) १, ४, ५, १० भाव के ग्रह में अधिक शक्ति
- (11) ५, ८ भाव - सदैव शुभ फल
- (12) ८ भाव ५ भाव से अधिक बलवान
- (13) ३, ६, १२ भाव ३, ६, १२ में ये शुभ फल। अन्यथा अशुभ
- (14) १२ तथा १२ भाव में पाप ग्रह - विनाश  
 (जिस भाव में)
- (15) ३, ६, १०, ११ - रा० के रा० - शुभ
- (16) ११ भाव - क्रूर - विशेष शुभ  
 शुभग्रह - शुभ



(१७) १,४,७,१० - गुरु - १ लाख दश दूर - केन्द्राधिपति दश

(१८) ——— शुक - १० हजार केन्द्राधिपति दश

(१९) १,४,७,१० बुध - विपर

(२०) लग्न या लग्नेश - शुभ - अनन्त दश दूर

(२१) केन्द्र-पाप गृह - शुभ

————— शुभ गृह - अशुभ

(२२) रतया १२ भाव - अक्षिपत अधिकार

(२३) लग्नेश से चतुर्थी, पेश से १ शो, १ से दशमश शुभाशुभा

(२४) ३ से ६, ६ से ११ के स्वामी अधिक अशुभ

(२५) ३, ६, ११ भाव के स्वामी - अशुभ कल

(२६)

कुम्भी में गृहजप से २, ३, ४, ११, १२ - तात्कालिक मित्र

————— १, ६, ७, ८, ९ ——— शत्रु



## गृहाभ्यास

सबसे अच्छा योग - त्रिपुष्कर

या फिर - द्विपुष्कर योग

यदि ये योग काकी दूर हो और जन्म हो रा पत्रों में देखो

के + का विवाह न हो तो यदि ये भी दूर हो तो देखो कि

किस दिन पढ़ती जानगी है।

कुछ अन्य बातें

1) मे०, कर्म, तुल्य मरु, सिं का गृहाभ्यास करें।

2) रिक्ता (४, ५, ११) का भी

3) गृह प्रारंभ कंडली में ३, ६, ११ गृह

४) ————— ६, २, १२ गृह

५) भगल पुष्कर दृष्ट, पुष्क, रैर, मरु, पुष्क, मूल - मंगलवार - गृहाभ्यास करें

६) शनि — पुष्क, उभा, ज्यै, अत, स्वा, मरु - शनिवार - गृहाभ्यास

७) गृहाभ्यास के दिन संचयन अशुभ न हो तो किसी भी दिन गृहाभ्यास करें

८) गृहाभ्यास मिथु, कर्क, ध, मीन के सूर्य में

घर का देवस्थान - ईशान - अत्यंत शुभ

शौचालय - ईशान - अशुभ (तनाव)

————— - नैऋत्य - शुभ

जल सम्बंधी इकाई - ईशान - शुभ

————— - आग्नेय - अशुभ

रसोई - ईशान - अशुभ (तनाव)

————— - अग्नेय - शुभ



भारी समान	वायव्य	आशुभ
	नैऋत्य	शुभ
खाली जगह		आशुभ
भारी समान	पश्चिम	शुभ

उत्तर-पूर्व	ईशान
उत्तर-पश्चिम	वायव्य
दक्षिण-पूर्व	आशुभ
दक्षिण-पश्चिम	नैऋत्य

एरे रोकू काह रमानी उ रक्त रानी सा मरग ही र्थन उमरा  
उमरा हुम

دھڑ کا سہا - ۱۰، دھڑ کا سہا ۱۰، دھڑ کا سہا ۱۰، دھڑ کا سہا ۱۰  
پیلی سروں، کالی سیر، لکڑی، چھوٹی پیلی، چھوٹی پیلی، چھوٹی پیلی  
چو

गृहप्रश्न में

गृहप्रश्न में के दिन सू० निर्वह नीच	गृह के स्वामी का मरण
च० अस्त, निर्वह नीच	स्त्री
ग०	धन का नश

२) नींव भरत समय

सू० - मिथुन - मृत्युदायक  
सू० - मृगशिरा - राम



सू. - धनु - शनि कारक

सू. - मीन - राशि भाव

60 प्रति - मिकला

60 मिकला - 1 कला

6 कला - 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में  $\Rightarrow$  बाल अवस्था = 30-25 अंश

कुमार - 24-19 अंश

युवा - 18-13 अंश

वृद्ध - 12-7 अंश

मृत - 6-1 अंश

विपरीत राशि  $\rightarrow$  बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश

कुमार - 7-12 अंश

युवा - 13-18 अंश

वृद्ध - 19-24 अंश

मृत - 25-30 अंश

बाल मृत -  $\frac{1}{4}$  कल

मृत - विपरीत

कुमार -  $\frac{1}{2}$  कल

युवा - पूर्ण कल

वृद्ध - दण्ड कल



## ग्रहों का वर्णन

१) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, बरफ, दाढ़ि, मछुटे, आँख, नेत्र-रोग, पी लिया, गोंड आदि का प्रतिनिधित्व

२) मंगल- पराक्रम, झूठ, लाल रंग की वस्तुएँ, शस्त्रधातु, अहिंसक, चौर कर्म, खेपरा,

शुभ स्थान- ३/६/११

३) बुध-



सू० - धनु - शनि कारक

सू० - मीन - शनि कारक

60 प्रति - मिकला

60 मिकला - 1 कला

6 कला - 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में  $\rightarrow$  बाल अवस्था = 30-25 अंश

कुमार - 24-19 अंश

युवा - 18-13 अंश

वृद्धा - 12-7 अंश

मृत - 6-1 अंश

विपरीत राशि  $\rightarrow$  बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश

कुमार - 7-12 अंश

युवा - 13-18 अंश

वृद्धा - 17-24 अंश

मृत - 25-30 अंश

बाल ग्रह -  $\frac{1}{4}$  कला

मृत - विपरीत

कुमार -  $\frac{1}{2}$  कला

युवा - पूर्ण कला

वृद्धा - दृष्ट कला



## ग्रहों का वर्णन

- 1) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, बरफ, दाई, भय, अंध, नेत्र रोग, पी लिया, गोंड आदि का प्रतिनिधित्व
- 2) मंगल- पराक्रम, झुठ, लाल रंग की वस्त्र, शस्त्रधार, अहिंसक, चौर कर्म, खेरा, शुभ स्थान- 3/6/11
- 3) बुध-







શુભ	પર	કાલ	ઉદ્વેગ	અમૃત	રંગ	લાભ
અમૃત	પ્રેક્ષા					
પર						
રંગ						
કાલ						
લાભ						
ઉદ્વેગ						
પ્રેક્ષા						

ઉત્તમ ચૌંધડિયાં - અમૃત, શુભ, લાભ, પર

ચરાચર ચૌંધડિયાં - ઉદ્વેગ, રંગ, કાલ



शुभ तिथियाँ (भद्रदी दोष रहित) - दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, ११, शुक्ल पक्ष की १३

तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा

शुभ नक्षत्र - अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, इस्त, अनु, ज, धनि, रेव

मध्यम नक्षत्र - रोहि, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्व, ज्ये, मूला, शत

शुभ दिग्दश - पूर्व, उत्तर, आग्नेय, सौम्य - पश्चिम, दक्षिण, मध्य, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, पूर्व, उत्तर, ईशान, पुन - पूर्व, उत्तर, ईशान, पश्चिम, दक्षिण, मध्य

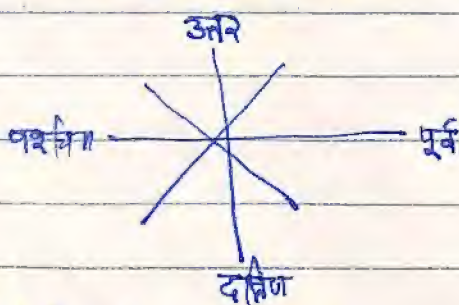
समयबद्ध - उषाकाल को पूर्व को नहीं जाना चाहिए

भाद्रपद को पश्चिम

अश्विनी को उत्तर

मध्याह्निकाल को दक्षिण

योगिनी - पूर्व, उत्तर, अग्नेय, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान पठवा नवमी से चली आई



योगिनी बाएँ - दुःख

योगिनी पीछे - मनवांछित पूर्ण

योगिनी दाहिने - धन

योगिनी सम्मुख - मृत्यु







१) गण्डमूल में उत्पन्न जातक के नक्षत्र के २० दिन पश्चिम  
उसी नक्षत्र मान में शांति करवानी चाहिए। यदि शांति न हो पाये  
तो जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान दान करवा लेना  
शुभ है

२) पैरों के समग्र दक्षिण दिशा की ओर, मकान, झोपड़ी,  
पुकार की छत डालना, चरपाई पल्ल बुनना, मुदा जलाना, लोह  
की चरपाई, पीतल प्रारम्भ आदि स्तम्भा शंख, तोता, पीतल, लूण-  
कण्ठादि का संचय करना, छत डालना कुरूप है

शान्ति

अशुभ-बक्री अवस्था-दुर्भाग्य कल में निहित  
शान्ति साधने एवं दैवादि ये प्रभावित जातक की  
कुण्डली में शनि अशुभ तो विरोध अशुभ होगा। यदि निज  
या मन्त्र हो तो अशुभ कम हो सकता है। बृहस्पति, शनि, कर्क  
बुध, मकर, कुम्भ, मीन एवं राशी कर्क

राजों में भी कर

अन्धाष्ट रो. कुम्भ  
सुलोचन कु. पु  
मध्याह्न भू. आ. मघा  
मन्मथ अशु. म. आशु

शिव मिलेगी  
वही मिलेगी  
पता लगाने पर भी वही मिलेगी  
व हुन मन्त्र करत पर मिलेगी

अन्धाष्ट में वस्तु पूर्व दिशा  
सुलोचन उत्तर  
मध्याह्न में वस्तु पश्चिम में सुलोचन  
मन्मथ में वही



विवाह में प्रमुख समय यों

- 1) गुरु उत्तर - दोष (उदित पूर्व, नायक त्याग)
- 2) शुक्रास्त - दोष ( ————— )
- 3) चन्द्रोदय - दोष ( ————— )
- 4) गुरुदशम - उत्तराषाढ में नक्षत्र लगन के पश्चात् ~~दोष~~ दोष
- 5) ज्ञात - दोष
- 6) भीष्म पंचम - चंद्री में
- 7) चंद्र मास
- 8) द्वात्रिंशक - दोष (उदित, पूर्व भाग में होने ह)

गुरुआदि उत्तर

गुरुआस्त, शुक्रास्त, अधिमास में वर्ष उत्तर

गुरुआस्त (निर्माण) एवं प्रवेश, कुआं, तालाब का निर्माण, वृत्तास्त, जलधायन, नागपूजन, मुण्डन, कन्यापूजन, कर्णस्थ, समाधि-विवाह, रथप्रवेश, गोपान, देव प्रतीक्षा स्थापन, आतुर्गस्थ प्रपण, अग्नि होत्र प्राप्त, वीणा, यन्त्र

ज्येष्ठ ज्येष्ठ लगे लगे लगे, संजन्म, मस वस्त्र, दिवस पट्टिका

अशुभ

वेम के विवाह नक्षत्र से वात कानक्षत्र 5/93/23 टा कान का मुख 70/90 कान की लह, मुख चालाह में जिस विवाह प्राप्त हो उत्तर है आतुर्ग राग वस्त्र लगे की मृदु



वर्तमान तिथि + तार + वक्र की संख्या को ~~जो प्राप्त है~~ जो प्राप्त है  
उसमें वर्तमान प्रहर की संख्या जमा करें तथा 8 से गुण कर क  
7 द्वारा भाग दें

- 1 तारे आइ बुध ग्रह भूमि में गति
- 2 वक्र नष्ट वस्तु किसी वर्तमान में बस
- 3 वक्र पानी में गिर
- 4 वक्र भूमि के ऊपर स्थान में बिपाठ
- 5 वक्र भूसं में छपाई
- 6 वक्र मोटर में छिपी
- 7 वक्र राख में छिपी

लड़क को 3, 6, 9, 11 सूर्य शुभ, 1, 2, 4, 7, 9 में पूज्य (पूजा करवा  
तथा 8, 12 त्याग्य) कन्या के 1, 3, 5, 10 गुरु साध/रुद्र: पूज्य  
7, 12 विशेष रुद्र पूज्य

पंच ग्रंथ सिद्ध ग्रन्थ - जैन ग्रन्थ, प्रतिक्रम, अमरा, तृतीय, 4,  
विजयदशमी, दीक्षा, वसंत पंचमी। परंतु विवाह के लिए फल है

अभिहित में सभी कार्य की जा सकते हैं  
यदि 12 सितंबर 2003 को अभिहित जावता हो तो  
दिनांक + 30/90

अथ  $95/25 = 4$  घंटे 10 मिनट  
इसके 4 घंटे  $4 \times 20 = 80$  + सूर्योदय (4:15) =



१२ बजकर २४ मिनट आग्निविह का मन्त्रोक्त

~~उक्त मन्त्रोक्त~~ से १ घंटी (२४ मिनट) तथा २४ मिनट पर्यंत

आग्निविह होना।

इस बीच शत्रु राक्षी का टुकड़ा ५ या २ भाग में अक्षत  
तो विवाह में दोषकारक नहीं

निर्मापगत मु०, ११ वं २०, अथवा लग्न या मन्त्र कर्मात्तम या व मा  
नवांशों के दो शत्रु राक्षी का कह

विवाह आदि में लग्न शुद्धि विचार

१) विधि की शरीर, पन्ड-को मन्त्र, यांग व मन्त्रों को शरीरक अंग तथा  
लग्न को मन्त्रा मन्त्र गाय ३

लग्न बल के बिना जो कोई भी शुभ कार्य किया जात है  
उसका फल बेजो हो जाता है

२) विवाह में विधुक्त लग्न के स्थिति होना में वर-कन्या के मेलोपन, तिथि  
वार, पुत्रपदि, मन्त्रि विह बुरे होना पर दोषापति का परीक्षण जात

लग्न स्थान में च०, सु०, र०, म०, रा०, आदि ग्रह ग्रहन हों, लग्न से  
छोटे स्थान में शु०, च०, लग्न से न हो तथा २ स्थान में च०, म०, सु०, रा०,  
शु०, व लग्न व हों, ३ कोई ग्रहन हो, यदि <sup>३०</sup> ~~३०~~ या चक्र हो तो  
दातादि से शांति हो जाती है। इत सब बातों का ध्यान में रखकर ही लग्न  
शुद्धि होती है।

१२ - रा०, १० - म०, उरुस्थान में शुद्ध, लग्न में चक्र

आदि पछा ग्रह लग्न की शुद्धता को इ प्रित करत हैं।



१२ वें श०, ३ शु०, १० मं० यथावित दान से शांत हो जाते हैं।

विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११ वें चरण, ६, ६, ११ श०, १०, ११ वें श०  
शुभ होते हैं

३, ६, ११ वें मं०, २, ३, ११ वें च०, ३, ६, ७, शुभ और ८ वें स्थान का  
छोकर अन्य भागों में शुभ - शुभ तथा ८, १२ वें छोकर अन्य  
स्थान में शुभ, शुभ - शुभ भी हो सकते हैं

जन्म लग्न व जन्म राशि का लग्न - शुभ, जन्म राशि से ३, ६, ११  
वां विवाह लग्न - शुभ वांछनीय (वर-कन्या की जन्म राशि, लग्न से  
३, ६, १२ राशि स्थ लग्न अशुभ परंतु इससे परिहार स्वरूप जन्म  
राशि या जन्म लग्न के का स्वामी, विवाह लग्न का स्वामी समावटी,  
अथवा मीन मंत्री से, तत्पश्चात् अष्टम स्थ लग्न राशि का स्वामी केन्द्र  
में स्थित होता अष्टम का दोष दूर)

कुटूंब दोष लग्न से पाप ग्रह - मारुति - १२ भाव

कूर भाव - वकी - २ भाव में

वां कुटूंब दोष दूर। यह योग परित्यज्य, शोक, मृत्यु, दुःख  
कष्टकारी होता है

परिहार - कुटूंब दोष का रक्षक ग्रह नीच, धनु मंत्री, अक्षयगण होता है  
परिहारा यदि शु०, शु०, शु० शुभ में कांश शुभ ग्रह के द्वा द्वितीय  
में अष्टम राशि या १२ वें भाव में होता परिहार



1) अष्टम शौच में परिवार. जंगल अस्त, नीच, शत्रु (नियत एवं मन्त्र) का होकर अष्टम स्थान में से तो दोषमाला वही, परंतु लग्नश होकर अष्टगत नहीं होता चाहिए

2) द, च चन्द्र का परिवार, नीच शशि, नीच ताराशतक, द, च १२ वें स्थानस्थ होने दोषपूर्ण नहीं माना गया है परंतु लग्नश होकर अष्टगत होकर

3) षष्ठाष्टम नहीं होनी चाहिए, कब. एवं पूर्ण च. लग्न में दोषकारक नहीं होता। नीच या शत्रु शरीरमंतक, द, च दो दोषकारक वही, परंतु लग्नश होकर इन भावों में वही

धृ युग गत - १ बार - अष्टम व ४

घ लग्न में संक्ष, विक्षेप - ४५ शुभ, तु. तथा ११ भाव में च. एवं अथवा सप्तमेरा - अथवा दोषों का नाश

च विवाहप्रसन्न का कृ. मर कर वंश हो व करिबि हितप्रसन्न प्रविष्टा तथा है परंतु म. सु. मालि सौम्य भवों का चरण वंश

बड़े बड़े लड़के का विचार बना म. स. जलानुद्धि, तम, नग्न में वही तीव्र जेब (बड़ा बड़का, बगीलडकी, ज्येष्ठ भा. स.) पूर्ण तः व. जना आर. यकता पर ज्येष्ठ मास में सांस्कृतिक कृति का सूर्य के ल. जा. के सूर्य दा. जा. के करिब विचार हो ना करि जाती है। ज्येष्ठ मास की मांस अगुज न. का ल. उ. के करिब को सा. गि. री. दि. के मा. तम।



सगे भाई-बहन का बिवाह माय के भीतर नहीं करता है - यह संवत परिवर्तित हो तो कोई दोष नहीं ॥ बिवाह के बाद महीने के भीतर गुग्गुलु, यज्ञोपवीत आदि शुभ कर्म न करें। कन्या बिवाह का पंचम पुत्र बिवाह माय के भीतर शुभ ॥ दो सगे भाईयों का बिवाह दो सगी बहनों से - अशुभ। एकवर के साथ दो सगी बहनों का बिवाह - अशुभ दो सगे भाई-बहन का दो सगे भाई बहनों से बिवाह - अशुभ जुड़वे भाई-बहन के प्रामाणिकता का एक मन्त्र पर शुभ। यह छ महीने का मन्त्र उनी हैरत के मन्त्र के विपर

बिवाह की जरूरत

रवि	च	मं	ग	क	शु	स
नवीवस्त्रपण शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ	अतिशुभ	अशुभ
नवीवस्त्रपण शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
नवीवस्त्रपण अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	विशेष	शुभ	विशेष
रत्ना मन्त्र मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	—	मध्यम
रत्ना मन्त्र अशुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	—	मध्यम
मुकुटपण अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ
पात्रा मन्त्र						

प्रसूति और वातक और सुतक का दौर

रुद्धी जात विपर =

- 1) यदि कन्या की कुण्डल में 7 सौरा ग्रह के साथ रुद्धी होती कन्या का बिवाह बड़ी आय में होता है



- 2) यदि स्त्री में वृ. गु. तथा में दो और गु. 12 वें भाग में दो तो स्त्री का विचार - दीर्घाणु में
- 3) जिस स्त्री के जन्म क्षण में शुभ 11 शुभ वातों प्रकट के मृत तो उसके परिवार - शक्ति है।
- 4) यदि स्त्री के 3 भाग में एक अणु अणु पाए गए तो वैवाहिक सुख सख
- 5) यदि सख्य भाग में वृ. तथा शक्ति की युक्ति स्त्री का धर्म न पुंस्व
- 6) 2 भाग में वृ. हो तो स्त्री की व्यवहार संवत् होकर पुनः संवत् में बाधा

### विष कन्या योग

- 1) शनिवार, आशुषा, द्वितीय तिथि - तीनों के और कन्या - विष कन्या
- 2) मंगल, अशुषा, दोपहर -
- 3) यदि प्रभाव में मंगल पक्ष हो तो वृ. पंचम भाग में चतुर्थ भाग पंचम भाग पर कूट मृत की दृष्टि हो तो स्त्री के उपाय संवत्

### माता योग

यदि कु. में वृ. गु. 12 वें भाग में स्थित पर स्थित हों और शेष मृत इनमें शिव भागों में पड़े दो तो माता योग होता है और घर जल, धनवान, इत्यादि पक्षों से पुनः पक्ष से अधिक स्थितों से प्रकट, उच्च अणु होता है। शुभादु Compatibility में प्रत्यक्ष प्रकट



सू	शु	अग्नि	अध्या
प०	जल	जल	दीर्घ
म०	<del>शु</del> शु	अग्नि	दृष्ट
व०	जलीय	लेख्यपृथ्वी	म
म०	—	मत्त तज	म पा ६
र०	—	मत्त, जल	ह
श०	शुद्ध	वायु	दी
र०	—	—	दी
क०	—	—	मद

म०	ह०	मि०	सू०	सि०	६	७	८	९	१०	११	१२
अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वा	ज	अ	पृ	वा	ज
दृष्ट	ह	मत्त	मत्त	दीर्घ	दी	दी	दी	म	म	ह	ह

- 1) जन्मलम्ब में जल राशि से एवं उसमें जलत्वग्रह की स्थिति हो तो जात्रम मोटा एवं पुष्ट
- 2) तम्र या लवणपिपति ग्रह जलराशिगत हो शरीर स्थूल एवं पुष्ट
- 3) यदि जन्मलम्ब अग्नि राशि और अग्नि ग्रह उन्हीं स्थिति हो तो लघु शक्ति धनी, बली परंतु देखने में दुर्बल
- 4) पृथ्वी राशि जलम्ब तथा ~~स्वामी~~ ग्रह जल राशि शरीर साधारणः स्थूल
- 5) पृथ्वी राशि तम्र ग्रह पृथ्वी राशि शरीर शरीर स्थूल एवं दृढ़



- ६) यदि लग्न राशि पृथक्त्व की हो और पृथक् तब कथित जातक कद छोटा
  - ७) यदि लग्न नष्टत्व राशि वाला उसमें वापु का जातक दुर्बल किन्तु <sup>निरुद्ध</sup> <sub>तुल्य</sub>
  - ८) यदि लग्न अग्नि पृथक् तब की राशि हो और लग्न का घर पृथक् राशि का हो तो इडियों साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट शरीर स्थूल
  - ९) यदि लग्न में अग्नि वा वापु तब की राशि और लग्न का घर पृथक् राशि का हो तो इडियों साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट
- जातक का कद राशि के अनुसार टाला है

- १) यदि जातक के जन्म लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में शुक्र हो तो कि में दाग
- २) जन्म लग्न में मं, धुं और चं हो जातक का जन्म से रहे या दूठ वर्ष शिर में चोट से अपघात
- ३) जन्म लग्न में धुं और क्नाठों स्थान में शत्रु तो मस्तिष्क या बाँटें बान में चिन्
- ४) यदि लग्न में गुरु, सप्तम में रां और अष्टम में पापग्रह हो जातक के बाँटें राशि में चिन् या लग्न में गुरु या शुक्र तथा अष्टम में पापग्रह हो तो भी
- ५) धृ, सप्तम में और शुरु की दृष्टि तो मूत्रेद्रिय के समीप कि
- ६) धृ, भाव में शुरु, गुरु अष्टम में गुरु, लग्न या चतुर्थ में शक्ति पैर पर पद
- ७) चतुर्थ स्थान में राहु या शुरु में से एक का स्थित हो और लग्न में मं सं. स्थित हो पाँव के लम्बे में घन्टा
- ८) अष्टम भाव में स — दूसरे भाव में शुरु, अष्टम भाव में रां, तीसरे में मंगल जातक की कला



गौरव पत्र

यात्रा महति

34

तिथि १०/१२

पौष	माघ	फाल्गु	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भाद्र	अश्व	का	जि	वृ	शु	अथ	पू
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२															
३															
४															
५															
६															
७															
८															
९															
१०															
११															
१२															

महाभय, जीवाशु,  
कामज, सिद्धि, उ  
वलेरा व जीव वाशु,  
वाशु लाभ, संकर  
घर की घंटा मित्राशु,  
भाग्योदय, मित्राशु,  
बहुत बुरा, जीमि  
उनाशा पूर्ण  
सोमभय  
वलेरा किंतु जीव  
धन, मित्राशु

१००

कर्मशान	१ पहर	२ पहर
नवतारा	उर्ध्व	सुख
उर्ध्वपूर्ण	भाग	नवतारा
	लाभ	सुख
कल्याण	नवतारा	राज
मित्रमित्र	संकर	नवतारा
घर आते	संकर	नवतारा
रत्न सहाय	विनाश	लाभ
आते	शून्य	शून्य
	लाभ	भाग
	सम्पत्ति	सम्पूर्ण
नाश नहीं	मरु	उर्ध्व
नहीं	मरु	सुख



### +) वि परमेश भाव

जन्मकुण्डली में यदि लग्न की चन्द्र न देखता हो तो बलि  
 को जन्म समय उसका पीता घर में था, यदि स्वर्ग च, द, ग, १,  
 ५ भाव में चर राशि का और लग्न की त वक्ष तो पिता दूसरे  
 देश में। इन्हीं उपरान्त स्थानों में स्व स्थितवाही में पिता घर  
 में नहीं था परंतु वंश क्रय, विस्वाभास स्वयं तो भाग में था  
 परंतु ये पाँच तर्क हैं जब चतुर्थ न देखता हो लग्न की  
 मेष-धर, वृष-धर, मिथुन-धर, विस्वाभासक्रम

### २) माता पिता का दृष्टि स्थान

पिता के लिए स्व तथा दशम भाव माता के लिए चन्द्रमा  
 तथा ४ स्थान से विचार।

यदि जन्म की जन्मकुण्डली में स्व के साथ  
 अधम दशम भाव में पाप ग्रह होते हों या वक्षते हों या  
 सूत्र पापग्रहों की बीच तो पिता की कष्ट, यदि सूत्रों  
 ४/६/८ स्थान में पापग्रह, शुभ ग्रह काई भी राशि  
 की केपट

जो के साथ २/१२ स्थान में ४/६/८ स्थान में  
 शर ग्रह हो शुभ न होता माता की कष्ट

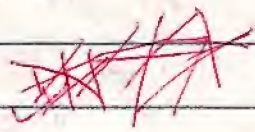




अटों से राग

१) स्वर्क - गुरु, चं - कफ, शुं, चं - वात कफात्मक  
वां, रां, कं - वात राग, बु - त्रिदोष, स्मं - पितृ राग.

स्व० -	हिन इल्लार, कुपण पक, <del>पुष्प</del> पुष्प वाशि - वल्लभान
गं० -	सा, श्रु, केरी
गं० -	मंग, कृ, पु
कु० -	वां, वं



Handwritten signature or mark at the bottom of the page.



मं. चर, वृ. - स्वि, मिथुन - द्वि

सूर्य - सूर्य सदैव मार्गों और उच्च उदय ग्रह है। इसके  
काल पुरुष की आत्मा कहते हैं। यह गुलाबी वर्ण, वृद्ध (80 वर्ष)  
पुल्लिंग, क्षत्रिय, सत्व गुण, अग्नि तत्व, पितृ प्राकृति, सिर,  
अश्व - नाटक, पूर्व दिशा का स्वामी,

जातक की आत्मा, नेत्र, दृष्टि, शारीरिक गुण  
शक्ति, आरोग्य, चेतित्व, प्रज्ञा, ऐश्वर्य, आचरण, अदृष्टा  
अधिकार, पितृ, मैरिट, स्नेह, उदर, मस्तिष्क, हृदय, रक्त  
कुसुम, जठराग्नि, मंद विज्ञान, भोगन्दर, अर्थ, हर्ष,  
मित्र, सिर - दर्प, नेत्र - विषय, अपस्मार, वाता, स्वर्ण, अधिकारी  
सर्व, ब्राह्मण, प्रसिद्ध, अधिकार विज्ञान, जौहर, स्वर्णकार,  
धातुताण, स्वर्ण, धान्य, लाल चन्दन, जल, तृण, नारिकेल,  
बोदीम, लाल रंग की वस्तुओं पर अधिकार

ग्रह परिषद में राजा, उग्र क्रूर, सिंह  
को स्वामी, उच्च मेष, नीच तुला, सिंह मूल (मार्ग)

चर, मं, गुण - मित्र

रा, के शुभ, वा - शत्रु

शु - समर्थ

घट 3/10 - 1

5/9 - 2

4/8 - 3

7 - पूर्ण



२२ से २५ वर्ष - तिरोध दोष निवारण हेतु - भाषिक्य

इतिहास उत्तर कालमात्र, उपा०, - केवल

जन्म कुण्डली में स्वरूप जहाँ बँडता

है वहाँ से वल्लभाय उल्लय काँड़ ग्राह - रंध्र । खर, शक्ति  
कमी लय नहीं । यह । भास में संचरण

~~अथ - स्वरूप भाषी तथा कल पुरुष में स्त्री । यद्यपि तिरोध~~  
~~कृष्ण पक्षी की तैलाक्षी - सुतर्दशी - वृद्ध~~

सभी तात्कालिक - शिरो - २, ३, ५, १०, ११, १२

रात्रि - १, ५, ६, ७, ८, ९

उद्योग ग्राह - लक्ष्मीदायक

वृद्धि ग्राह - परदेष्टा

मार्ग - अविरोध

अस्त - धन सम्मान का भाव

अथ

2<sup>1</sup>/<sub>2</sub> 30 अंश

4

ग्रहों के बल

1) नैऋतिक क्ष- शक्ति से मंगल दुगुना बल, बुध उगुना  
शुक्र चार गुना, शनि पाँच गुना, चन्द्र 6 गुना, सूर्य 7  
गुना

2

(2) दृष्टि बल  $\rightarrow$  शुभ ग्रहकीदृष्टि पडने से बली बुरा ग्रह  
बली हो जाता है।

(3) भाव स्थिति  $\rightarrow$  उच्चस्थानी ग्रह पूरा बली

मूल त्रिकोण  $\frac{3}{4}$  बली

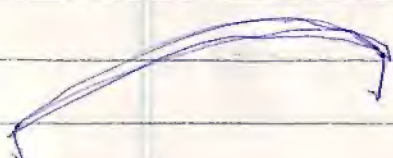
स्व राशि  $\frac{1}{2}$  बली

मित्र ग्रह  $-\frac{1}{4}$  बली

समग्रह  $-\frac{1}{8}$  बली

नीच राशि  $-\frac{1}{2}$  बली

शत्रु राशि  $-\frac{1}{2}$  बली



(4) चैष्टा बल  $\rightarrow$  स्वयं अथवा चन्द्र मकर से मेष तक  
किसी भी राशि में हो नै चैष्टा बली। यदि चन्द्र के साप-  
मं, बु, म, शु, रा से तो पाँचों ग्रह बली। कूट ग्रह  
सूर्य के साप न करे से धनु तक बली।



(5) चं, शुं - सप्त राशि - बली  
 अन्न - विष्णु - बली

लग्न में - बुं, गु

(6) चतुर्थ - चं, शुं  
 सप्तम - रा, नि, रा, केतु  
 दशम - चं, मंगल

(7) राशि में - चं, मंग, रा, नि  
 दिन में - चं, बुं, शुं  
 दूरसमय गुरु बली

राशि  
 दिन  
 दूरसमय

(8) कुं, मृ, कृष्ण पक्ष, सौम्य गुरु बुधका पक्ष

(9) शुं, बुं, शुं एव राशि - 1 मास  
 सौ

विष्णु राशि प्रथम 6 उच्च गुरु - बाल

अगले 6 उच्च - कुमार, पुत्र, दत्त, मृत

सप्त राशि में अष्ट

बाल अस्थि - मृष्ट 1/4

मृत - मृष्ट 1/4 + इष्ट

कुमार - 1/2

अथवा विष्णु

पुत्र - 1/2

दत्त, - दुष्ट काल

सूच्य से २, ११, १२ भाव वला ग्रह - स्त्री - शीघ्री

३ भाव - सम

५ भाव - मंद

५, ६ - भागी

७, ८ - वकी

९ - अति वकी

१० - भागी

१ - अस्त शिवाय वध

क्रूर ग्रह वकी - ~~अति वकी~~ मंद

शुभ - — — — शुभ

पू० च०, शुभ ग्रह शक्र, बु०, गु०, शु० - शुभ

ख०, धृ० च०, मे०, पाप ग्रह यु०, श०, वा० के० - उ०

शक्र - क्रूर

शक्र के०, मंगल - पाप ग्रह

स्वातंत्र्य वल ग्रह इ० निजमी



## ~~सुख-दुख के 12 भाग~~

- प्रथम भाग - मुख, पंख, दाढ़, गाल, नीचा, मस्तक,  
 द्वितीय भाग - दाढ़ी के नीचे  
 तृतीय भाग - दाढ़ी का फल, मदन, दाढ़  
 चतुर्थ भाग - पैर, गुदा  
 पञ्चम भाग - कमर के उपर का भाग  
 षष्ठ - गुदा स्थान, दाढ़ी का पांव  
 सप्तम - पैर का मध्य भाग नाभी  
 अष्टम - गुदा स्थान, पांव बायां  
 नवम -

यदि कुण्डली के जो न-2 से भविष्य वृद्ध वयस  
 है। उन वयस होते हैं।

- प्रथम प वर्ष मृत्यु - मात्र में पाप  
 2 से 12 - पूर्व जन्म के पाप  
 12 वर्ष तक - बाला रिष्ट  
 12 से 20 - योगा रिष्ट  
 20 से 32 - अन्धायु

वयस की कुण्डली में 4, 10 शुभ ग्रह - भोक्ता

सुखपूर्वक प्रसव

~

५५

१) जो लंगव च(चन्द्र) से ५, ७ में क्रूर गत माता को  
प्रसव के समय आने कष्ट १४ वर्ष ७ भाग परशमि,  
~~शुभ फल १२~~  
में, अति क्रूर गत की दृष्टि - आप्रदान द्वारा प्रसव

२) लग्न से ६, ८, १२ भाव क्रूर गत इन स्थानों में शुभ  
गत से तथा शुभ, शुभ पाप गतों के मध्य  
ले लक्ष्य संहिता को मूल्य कृत कर

३) लग्न में पाप गत, क्र पाप गत से सोप, शुभ गत को दृष्ट  
न हो तो बालासिद्धि

४) लग्न एवं उच्च भाव में पाप गत, वरहे में प्रीति  
शुभ गत न देखे तो भी बालासिद्धि भाग

५) चंद्र ४/६/८/१२ भाव तथा फल और पाप गत जो लक्ष्य

६) यदि लग्न का स्वामी जने भाव, शनि, राहु, मंगल आदि पाप  
गत युक्त एक वर्ष विषय अहं

तीन कंचाडों के पञ्चत लडका

तीन लडकें — कंचा ली त्रिखला शक

जो लडका, पिता, नाक पञ्च से लिए शनी, कन्द

माता के लिए अति पञ्चकम् । जन्म दिन से आस

पास त्रिखला पूना



गण्डर्वल

५४

अश्वि → मेघ शशि चंद्र के कु के इरावत में

उत्पन्न ताल के प्रायः सद्यपरीक्षा प्रथम ग्रह - पिता के लिए  
दूसरे में पापुलवकी

जो मैं शुभ कार्य आरंभ न करूँ

दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष	दिनांक	वर्ष
१/६/११	५/१०/११	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५	६/११/११	६/११/११	३/८/१३		



21

21

621

5

22

32/12

22 Feb

平

CH 1000

सुभाष

$\sqrt{13}$

*W*

बाल श्री -  $\frac{1}{2}$  कल

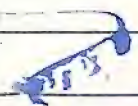
कमोर -  $\frac{1}{2}$

पुत्र - पूर्ण

पुत्र - पुत्र

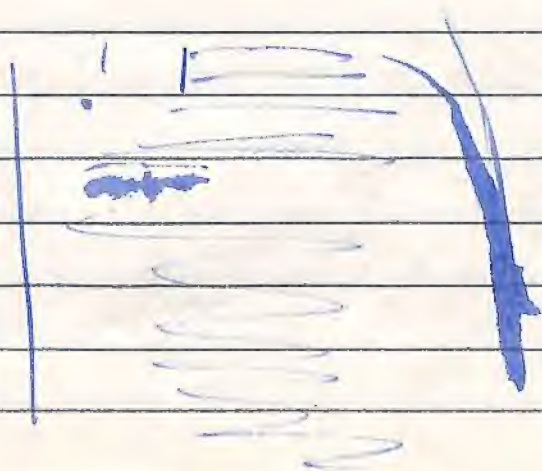
पुत्र - सौभाग्य

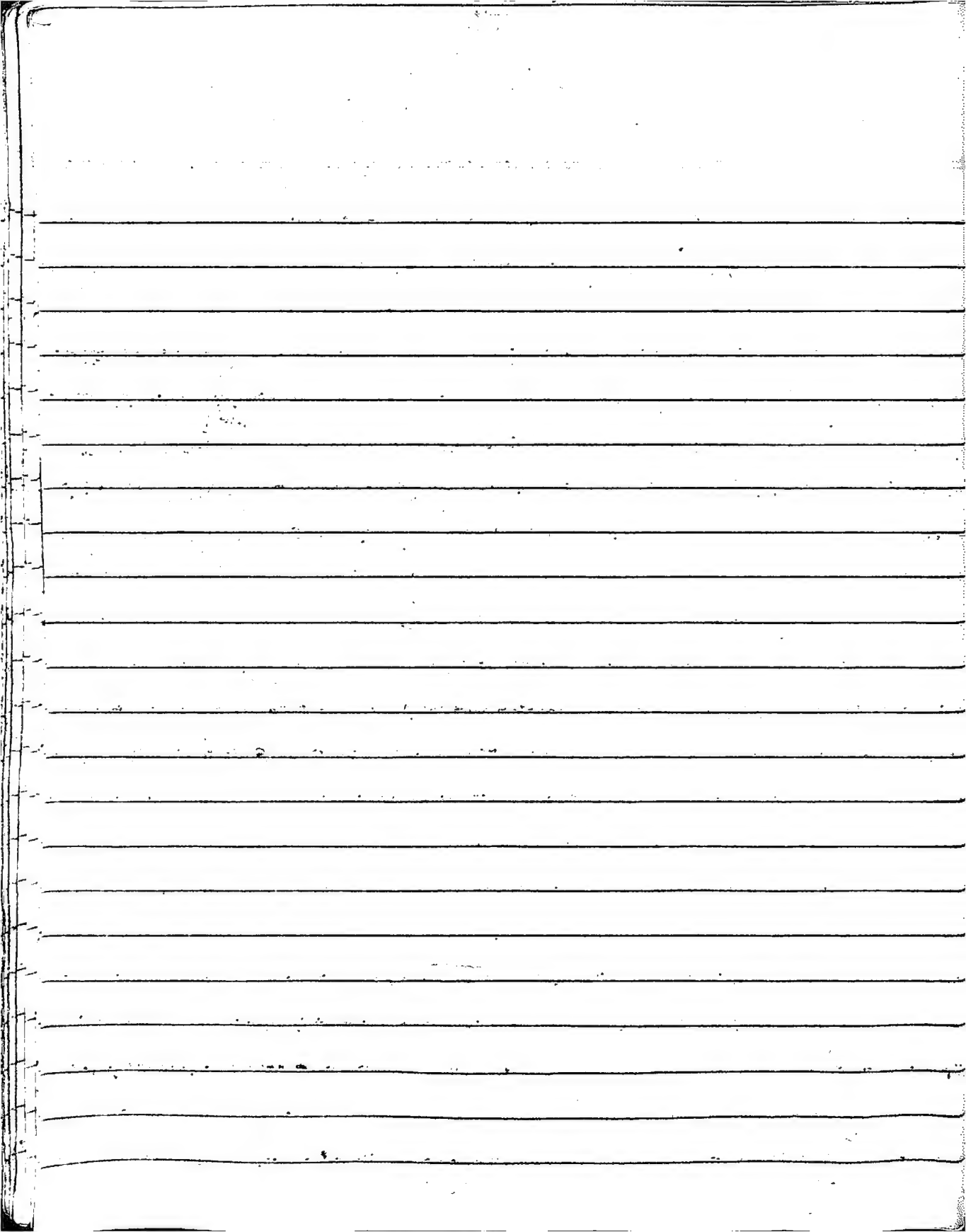




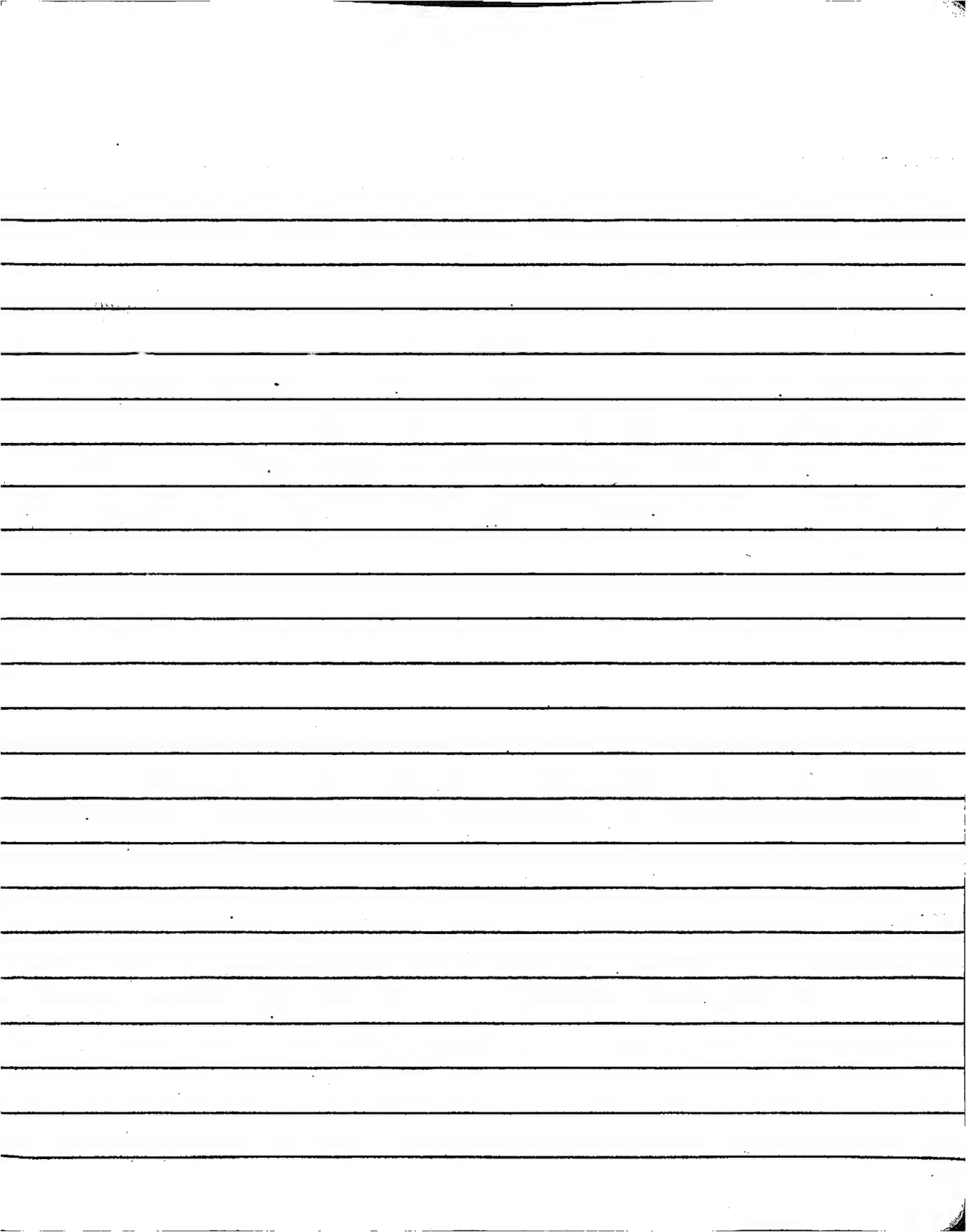
Manta  
Shark

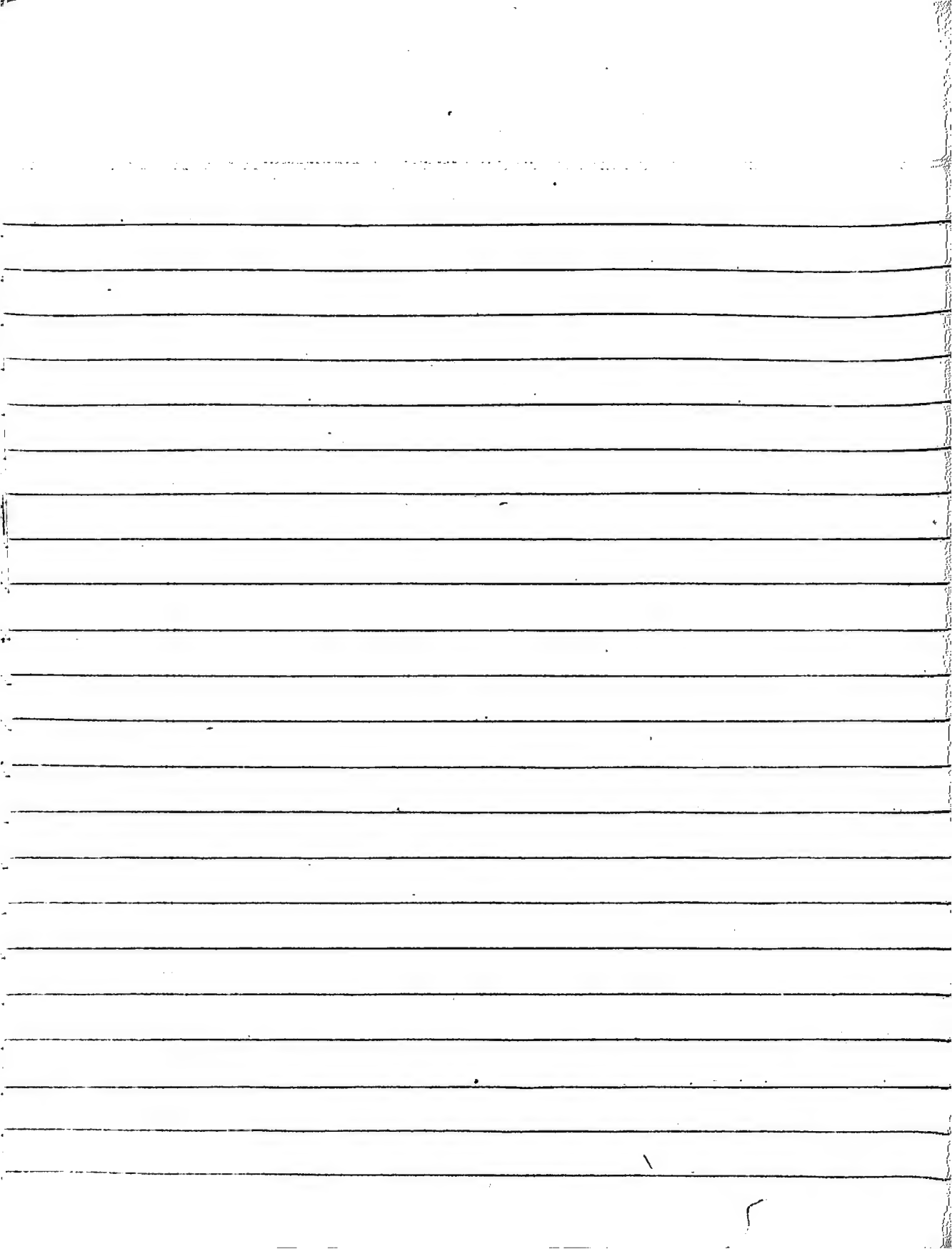
Manta  
Shark



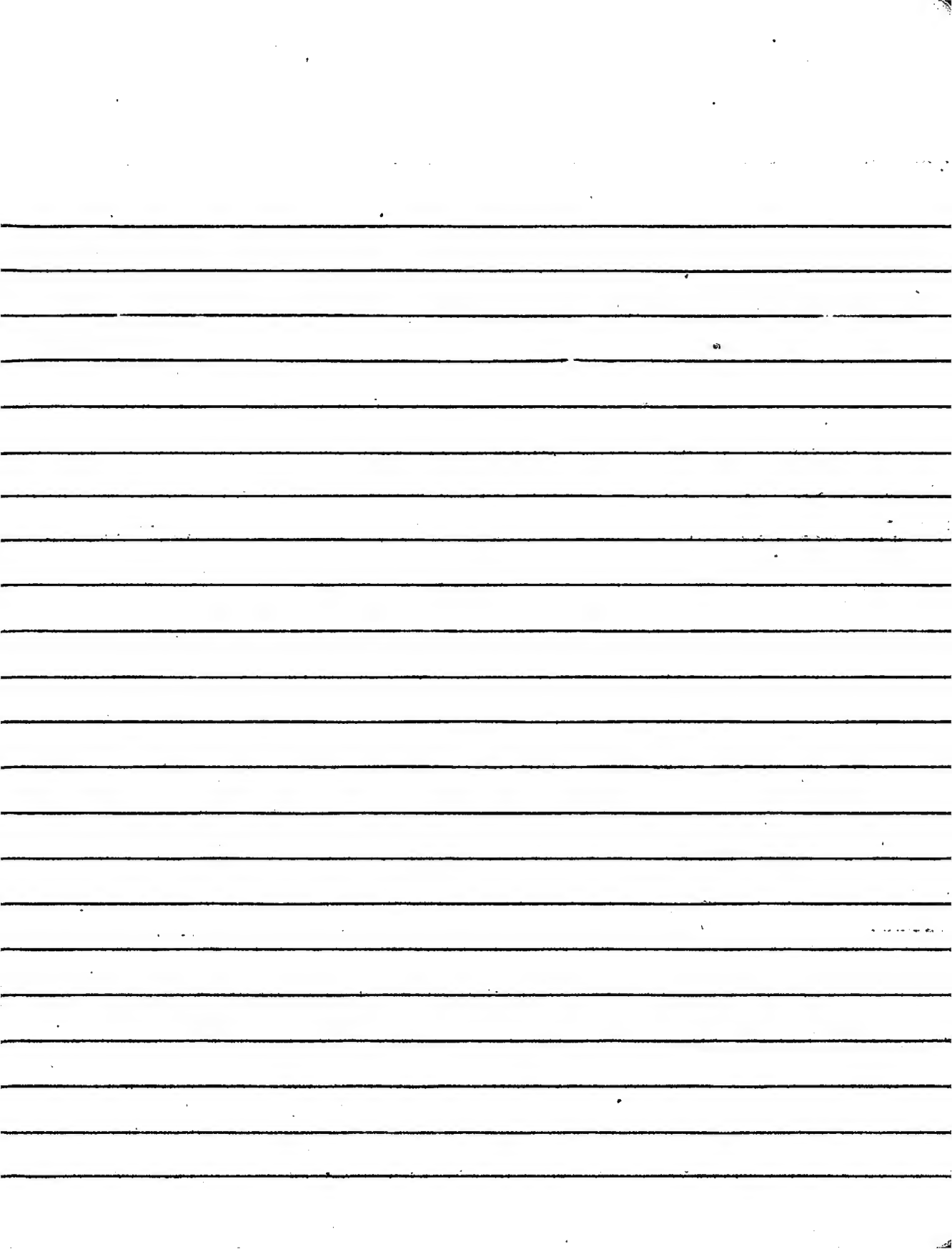


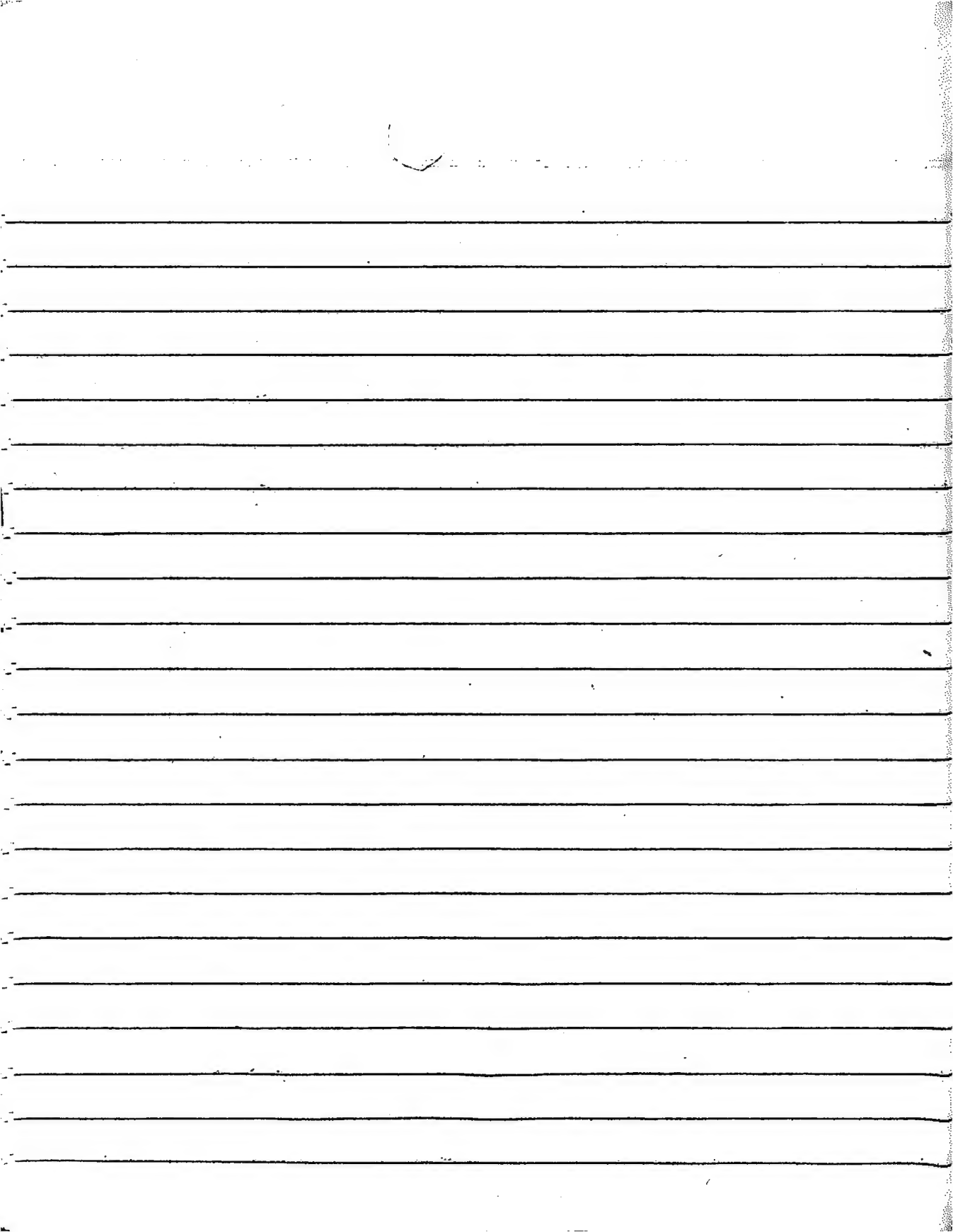




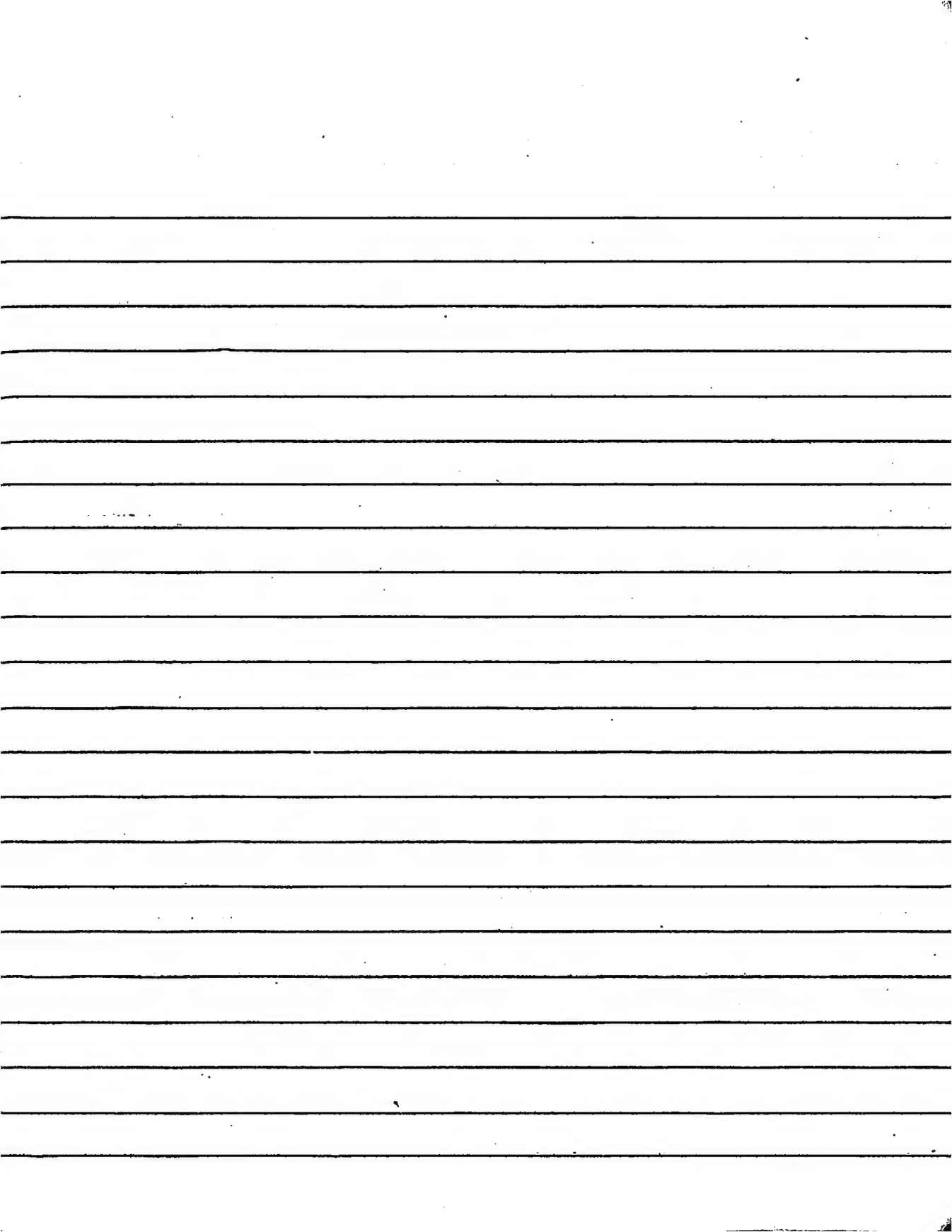


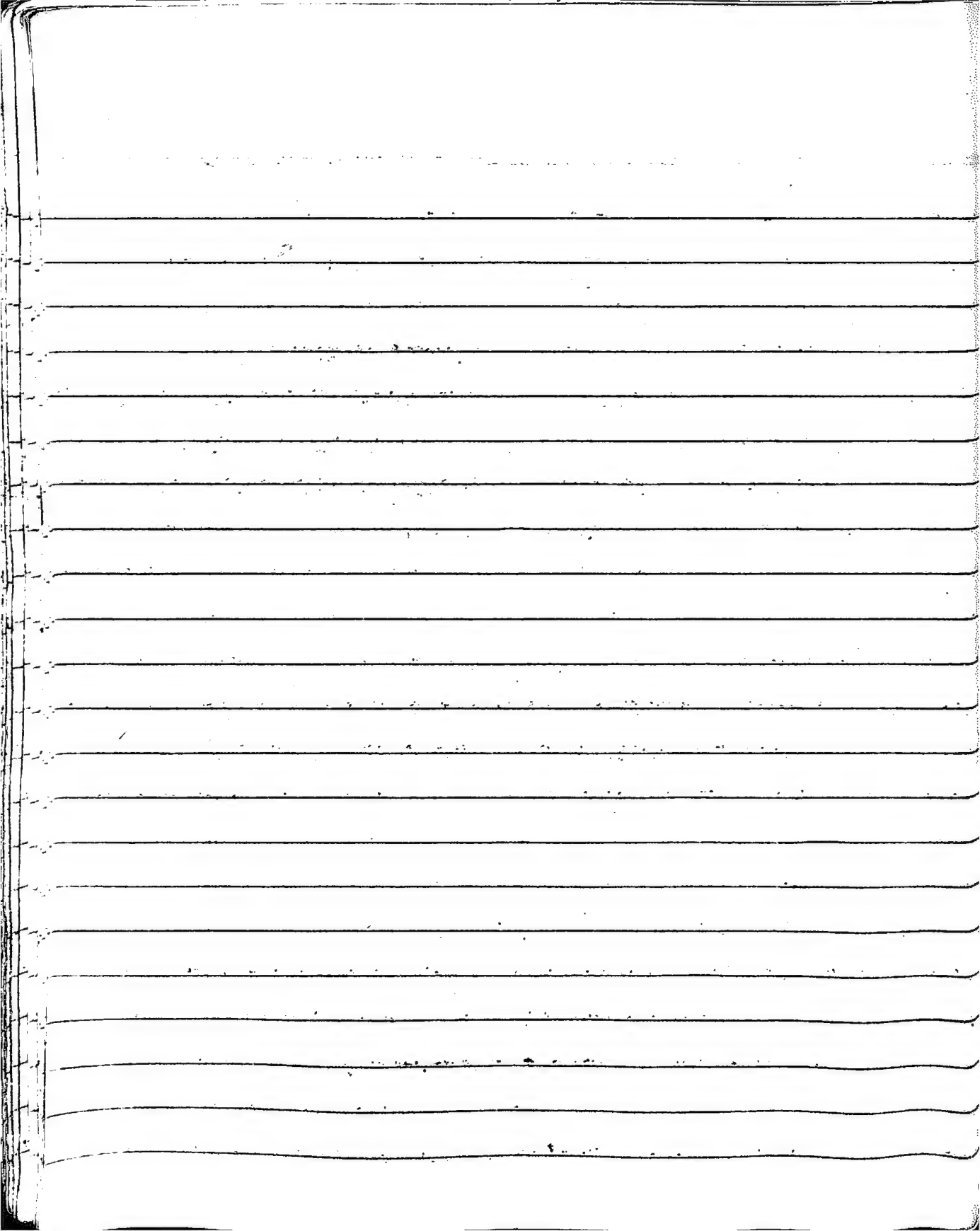




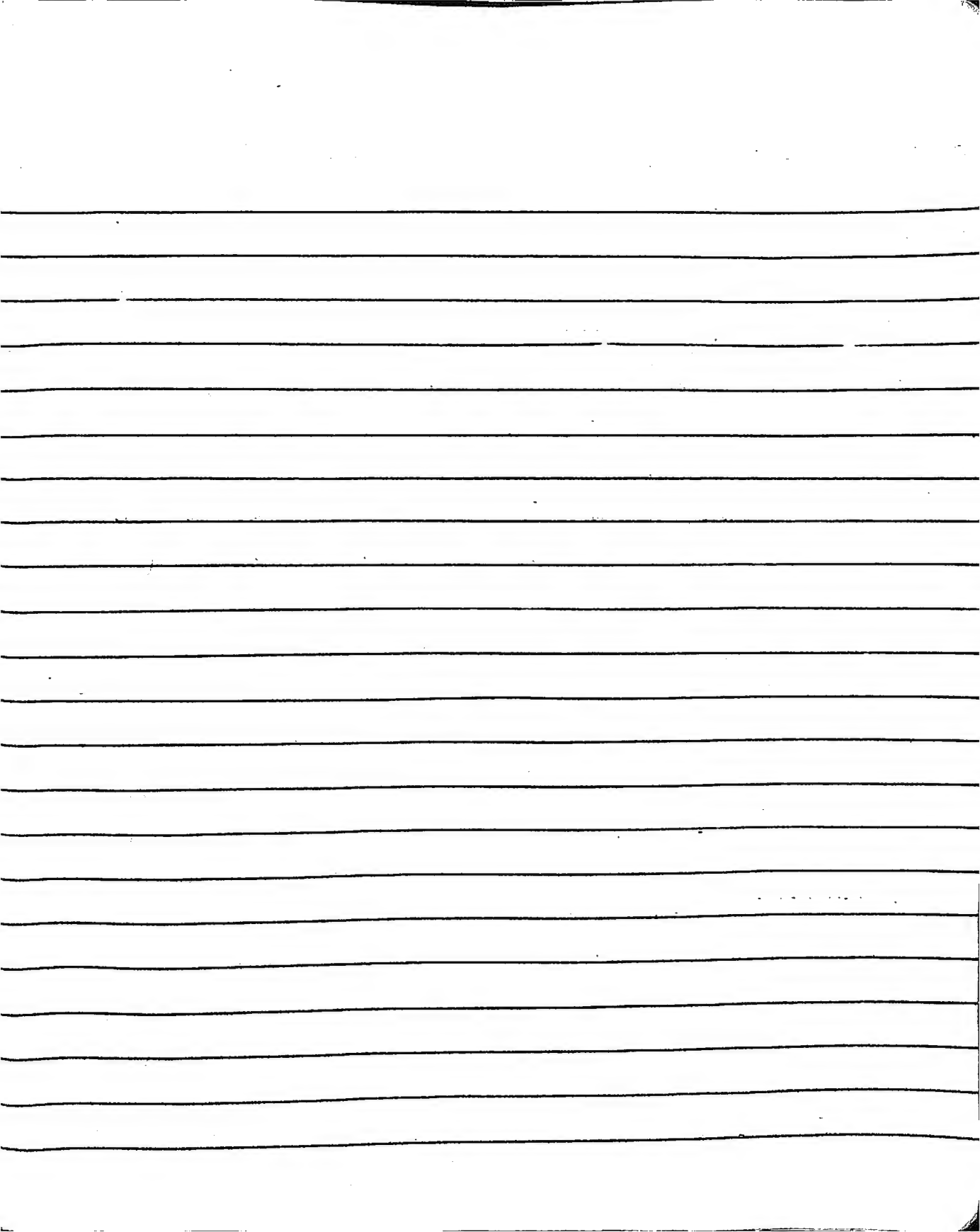


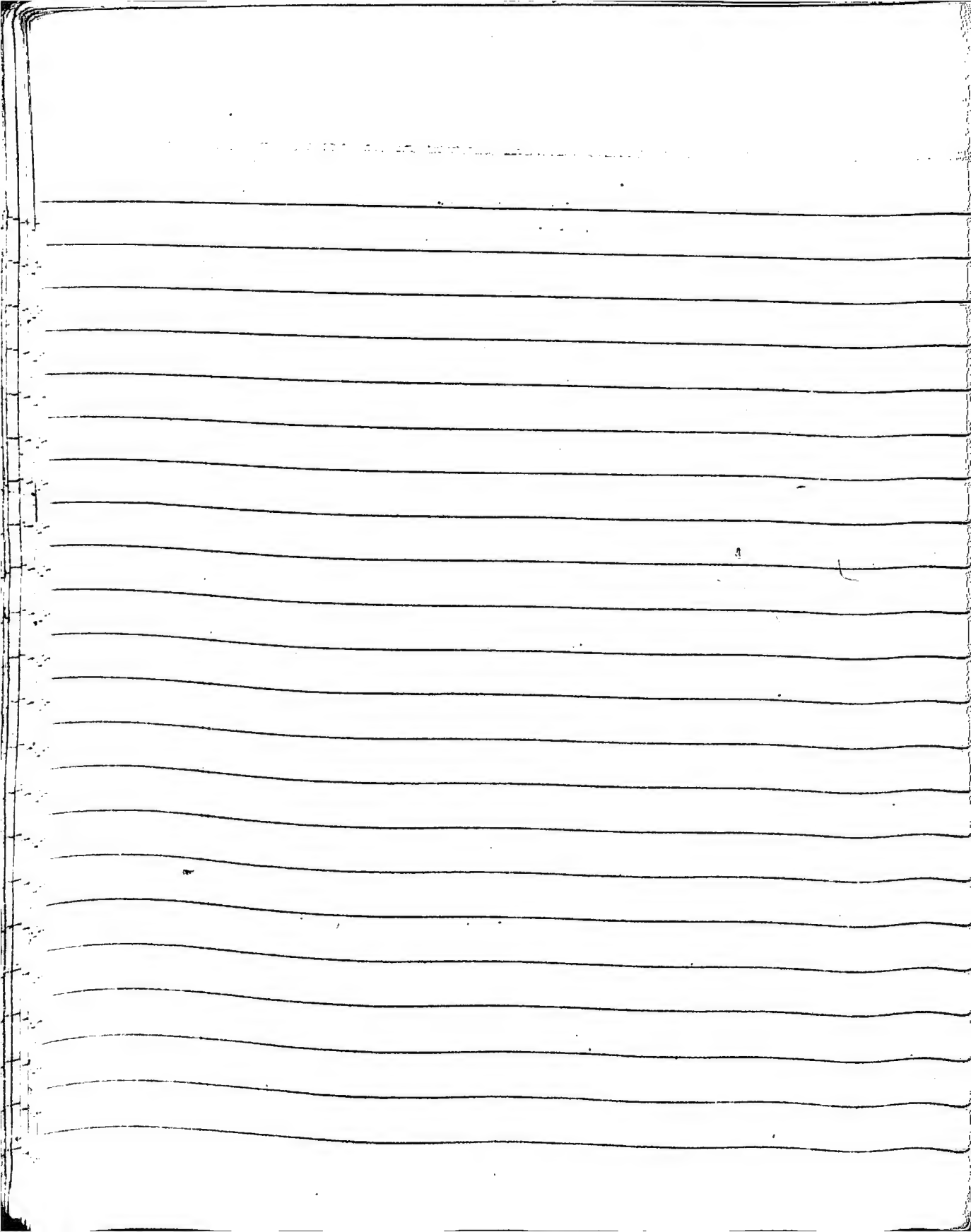




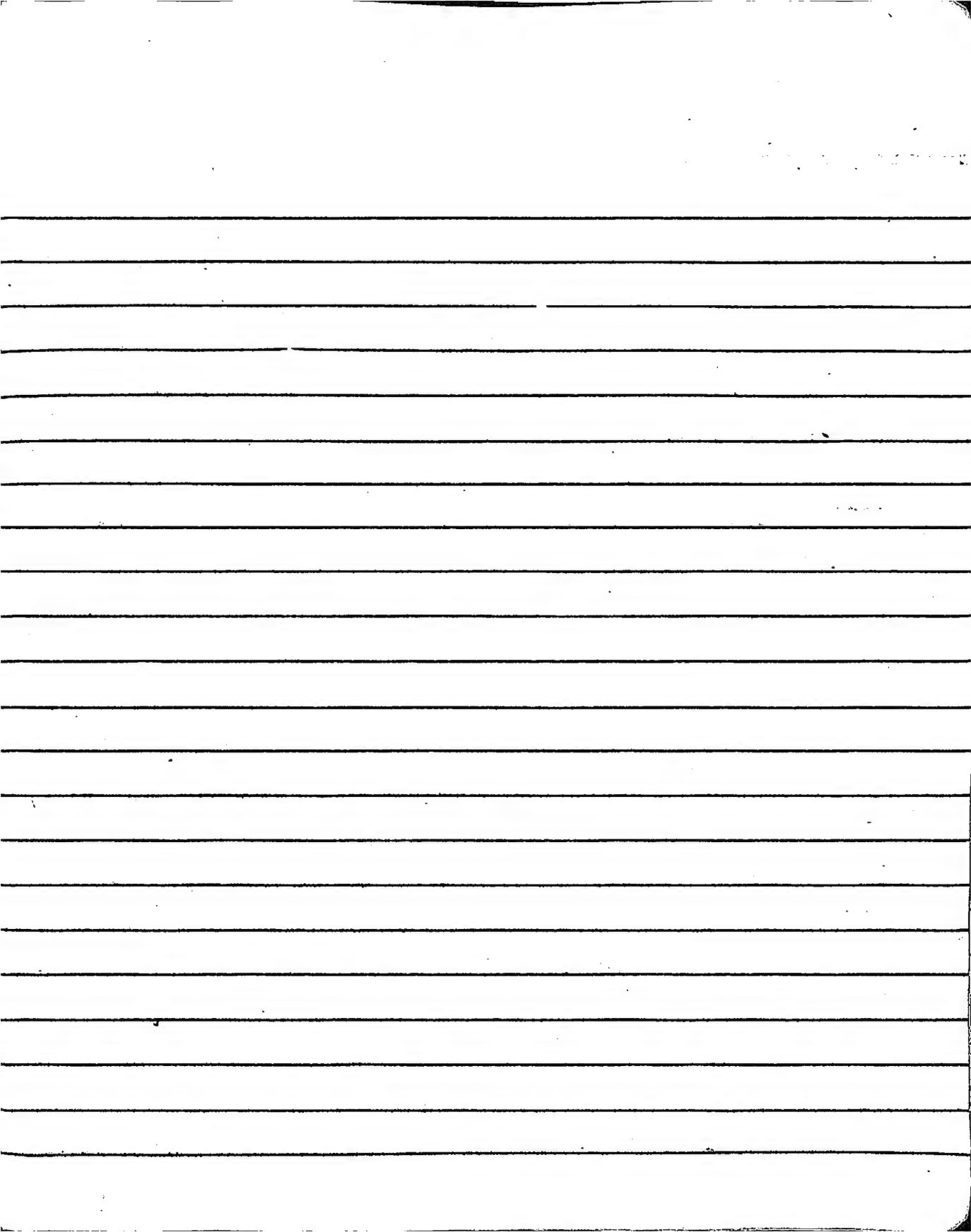


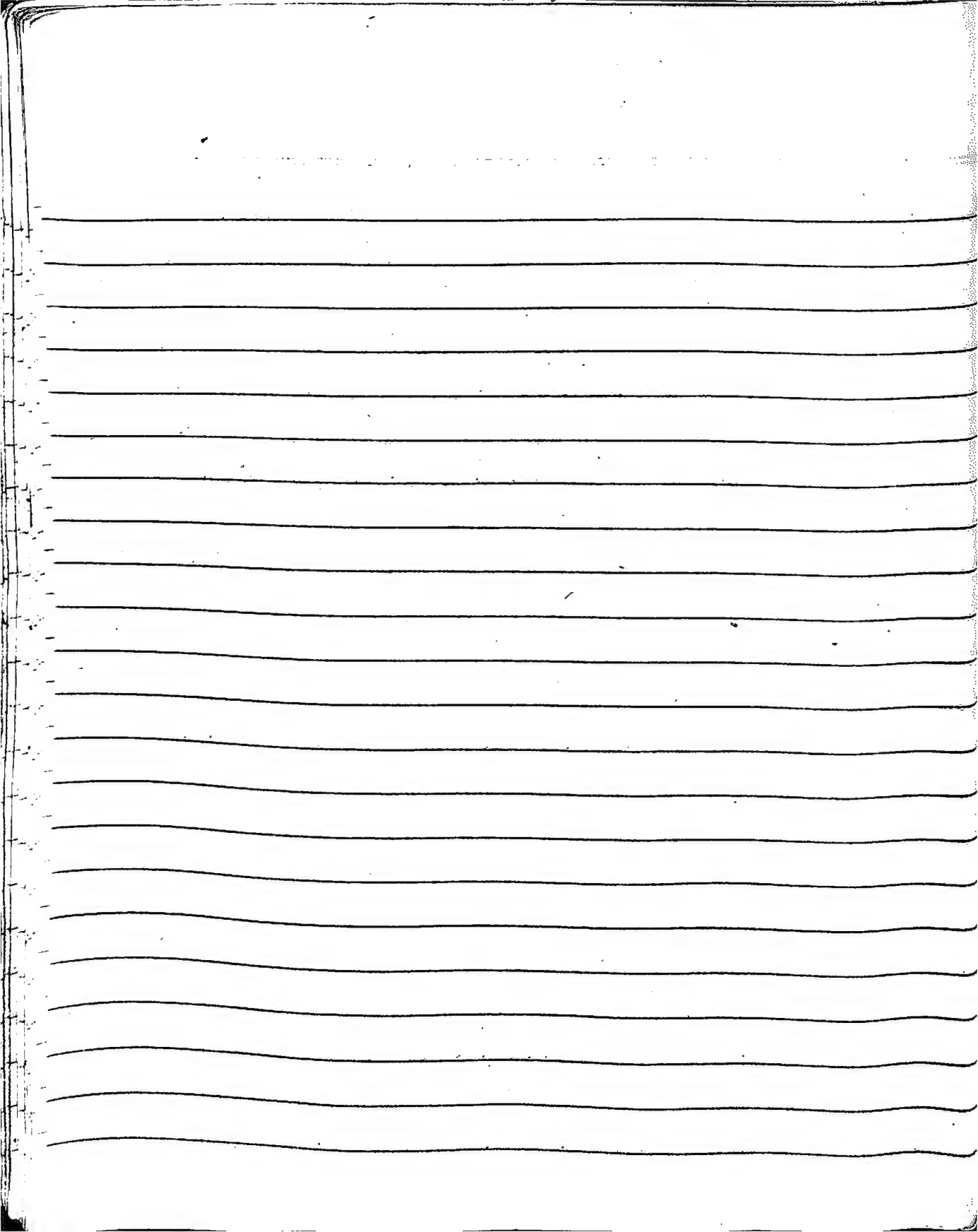




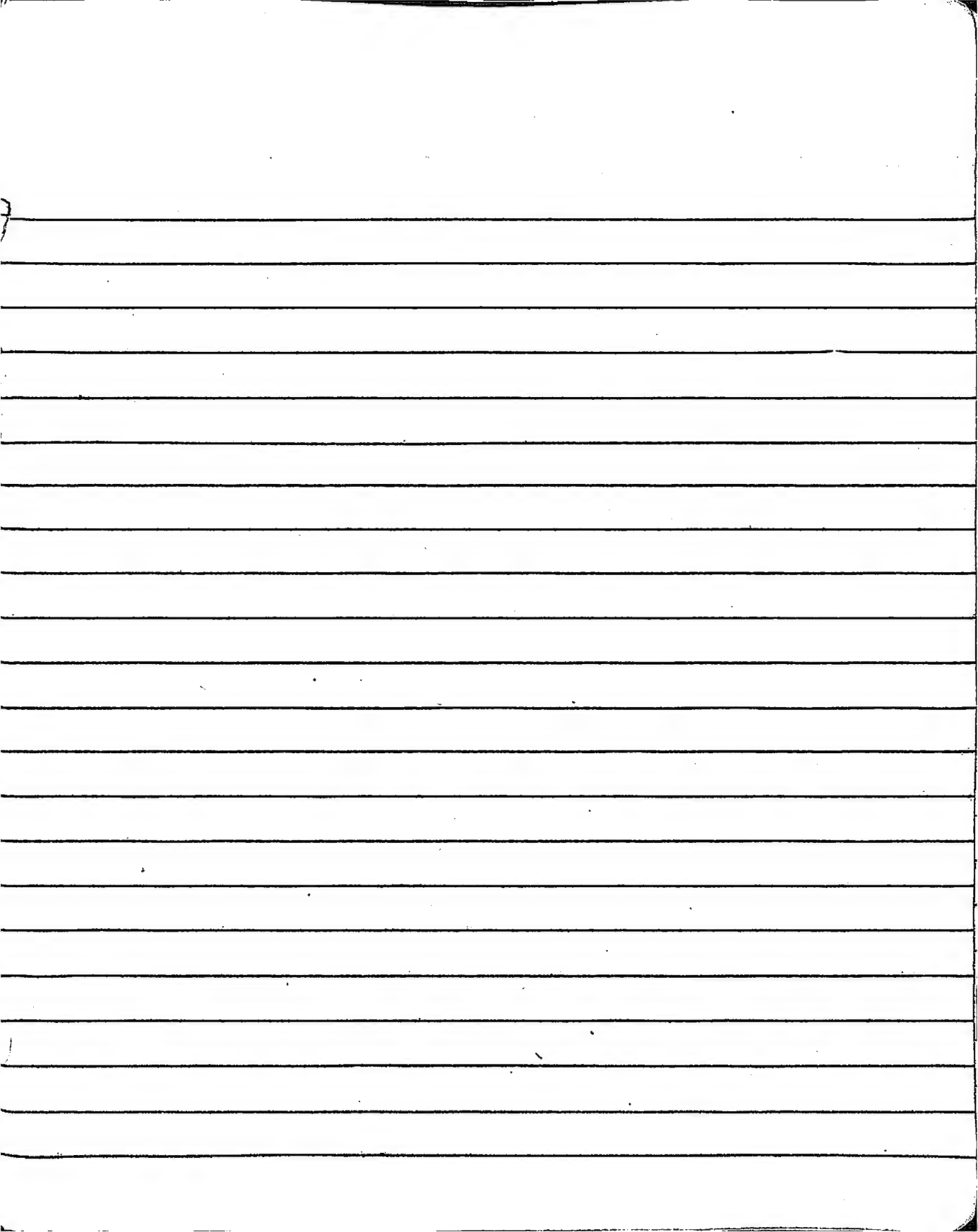


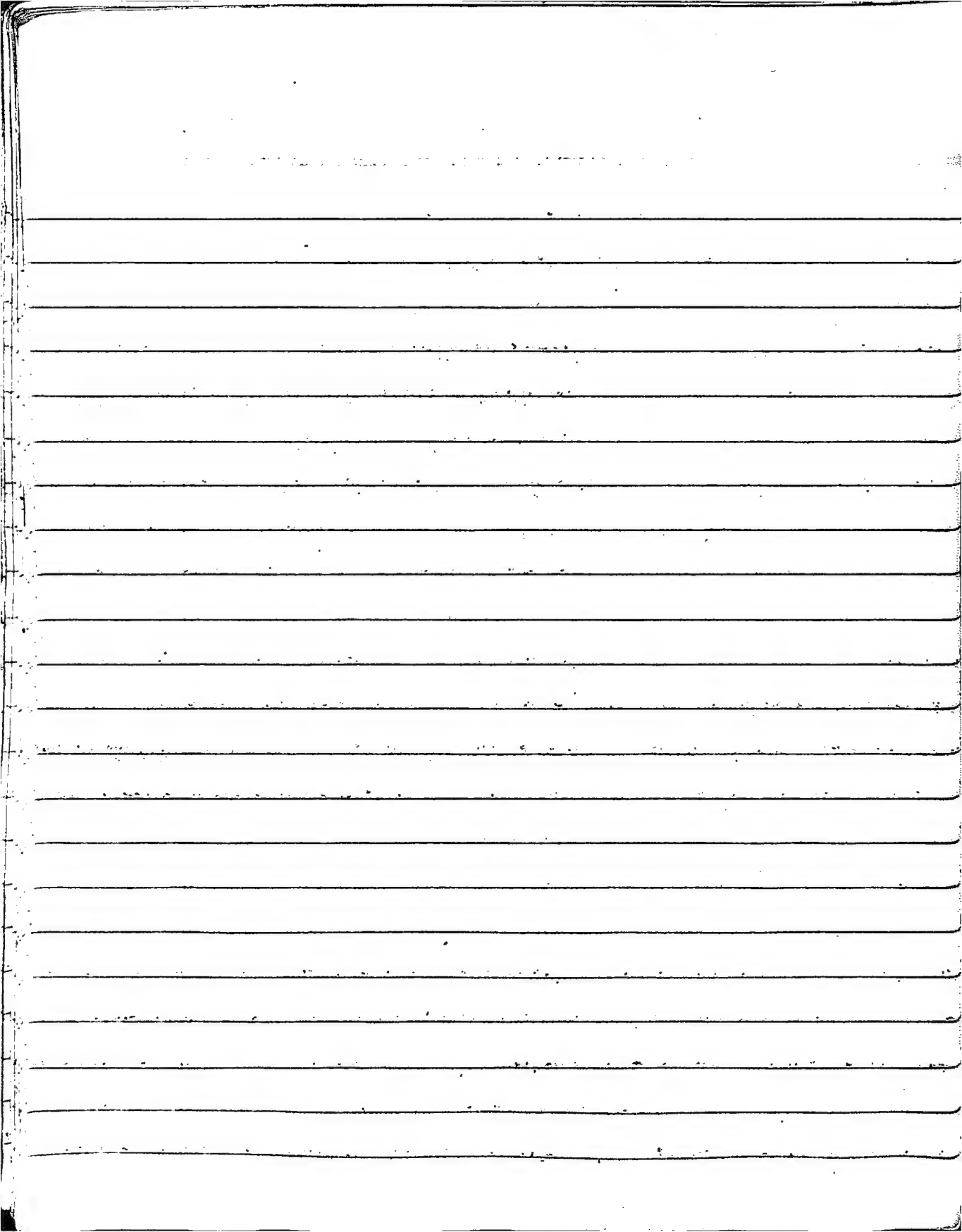




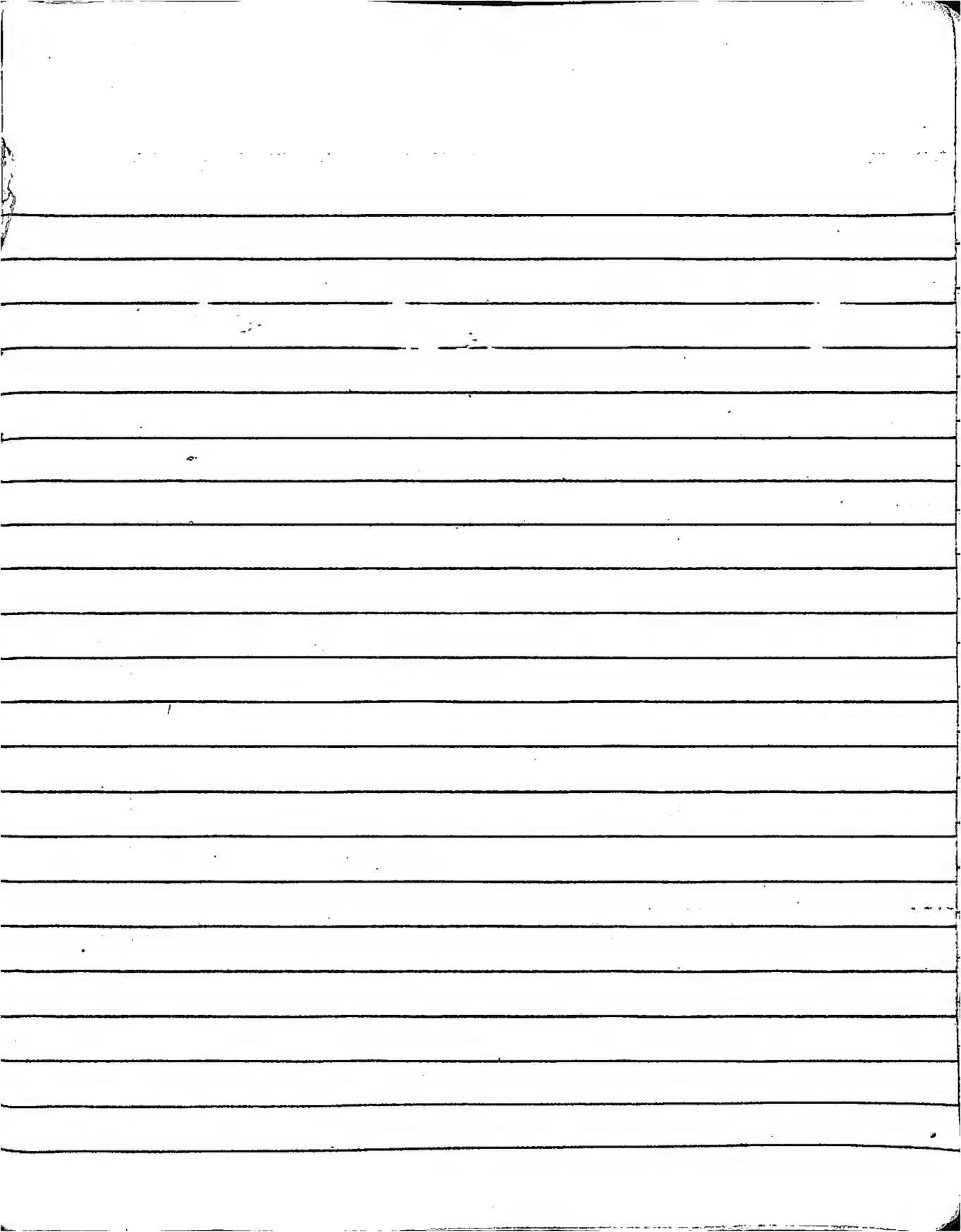


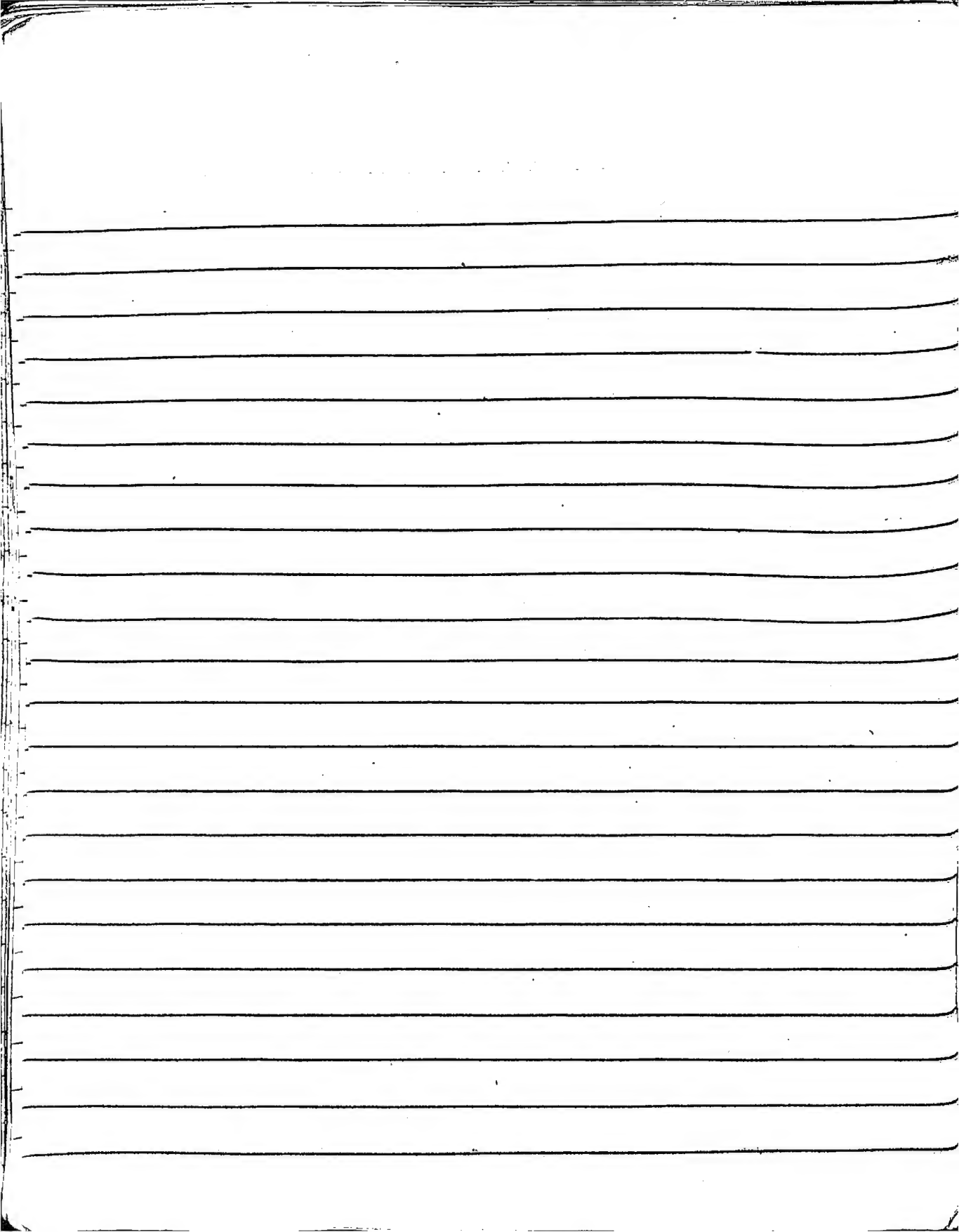








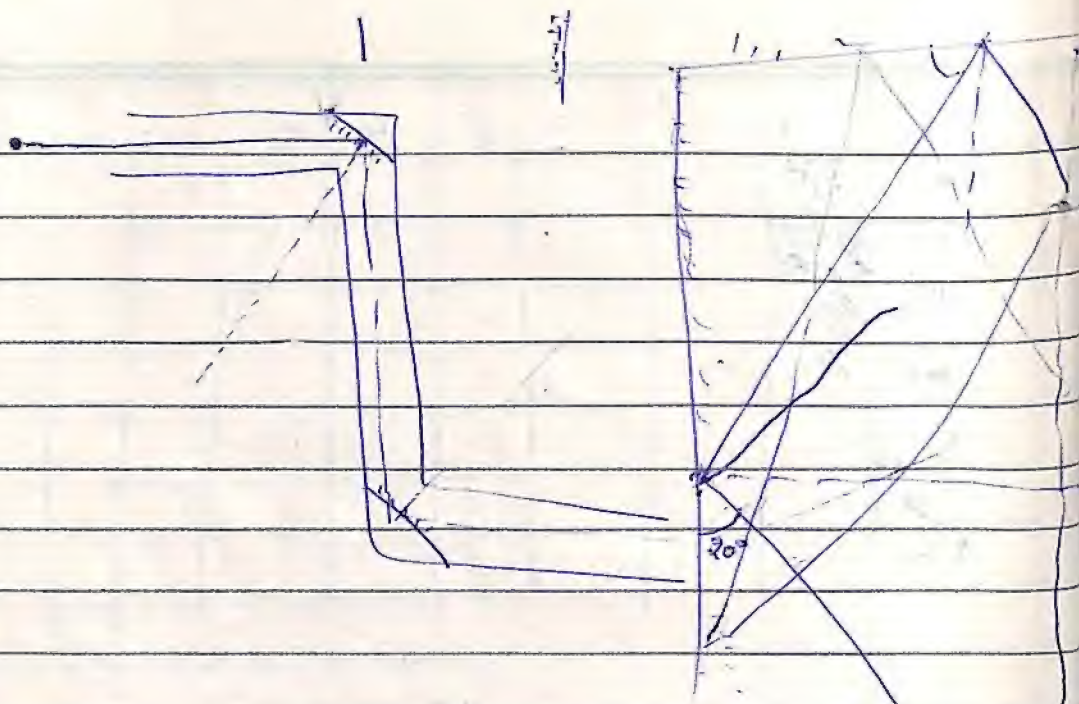




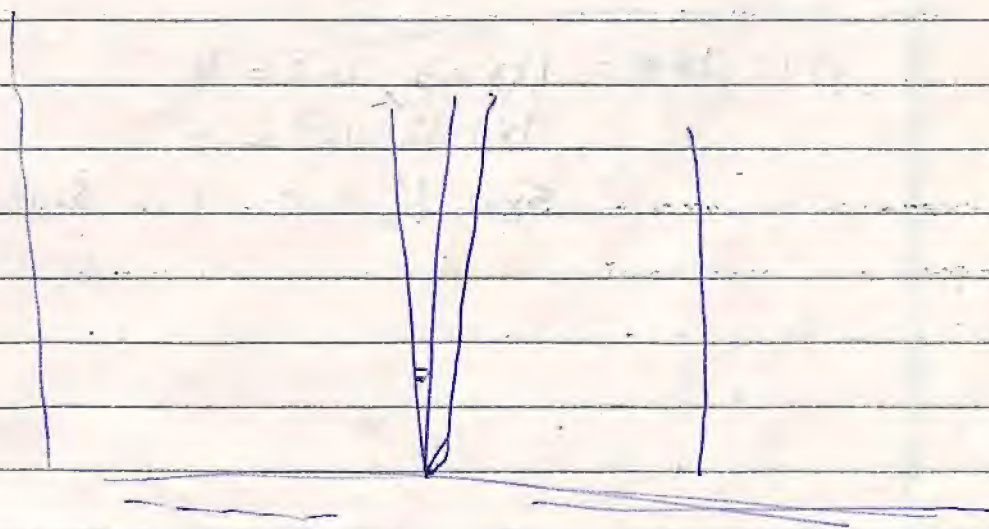
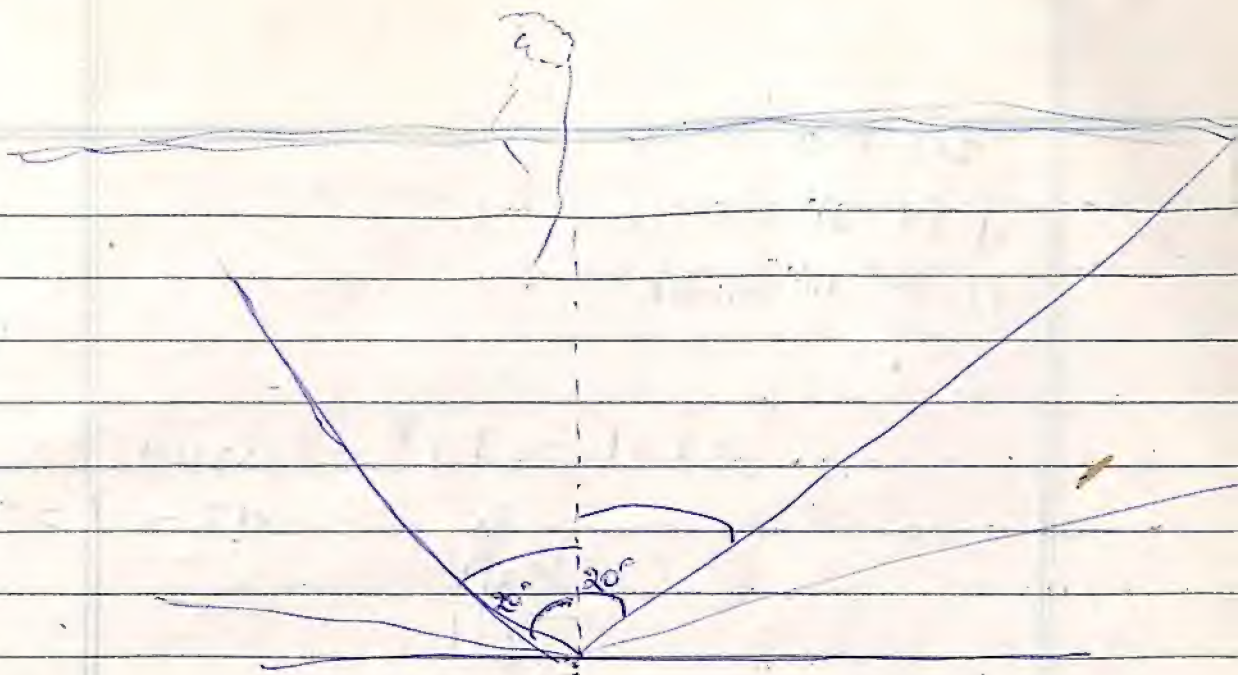


१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सु. सुभ											
च. कृ. सुभ											
मं. सुभ											
क. सु											
म. सु											
सु											
सु											
सु											

अंकित  
कमल







1) जो रीफ्ट राउरीय

2) दप-डोलो

3) तर्ज का यजामात्र

$$3 \times 31 = 37^2 = (3 \times 3) + (3 \times 1)$$

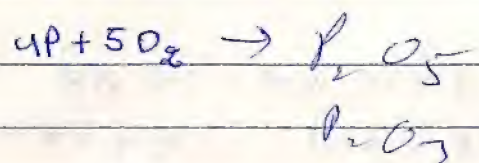
$$\begin{array}{r} 31 \\ \times 31 \\ \hline 961 \end{array} = 93 + 3 = 96$$

$$1777 \text{ ~~388~~ } = 1 \times 3 = 3, 7 - 3 = 4$$

$$4 \times 3 = 12, 12 - 7 = 5$$

$$5 \times 3 = 15, 15 - 7 = 8. \text{ So it is not divisible by 15}$$





मित्र न

अर्वाच्च बली - उच्च राशि  
उच्च बली - मूल विचार  
बली - स्वर्ग  
दीर्घ - तीव्र राशि

प्रमाण - किसी धर्मशास्त्रा इत्यादि का नाम निकालने  
के लिए मुद्रा देखकर देखें कि किस राशि का प्रमाण प्राप्त  
होता है उसी राशि पर नाम

मरु  
मरु के प/ड/१२ ~~सं~~ न हो तथा वर से प/ड/१२  
सं न हो।

समि वर दे प्रति  
फल



ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ

ਸਾਈ 292/1/C

2/2/19

2/2/19

2/2/19

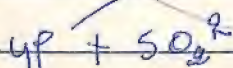
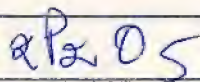
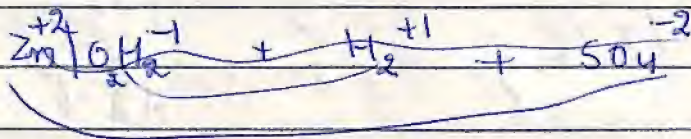
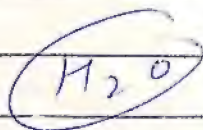
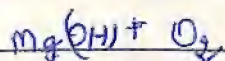
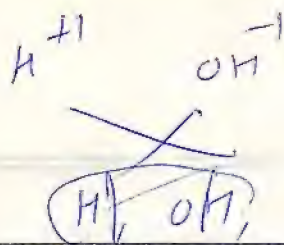
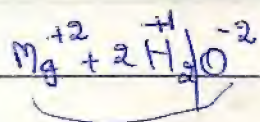
0.00

ਗਾਇਨ

ਮਸ਼ੀਨ

ਵੇਰਾ

ਸ਼ੁੱਧ





1 गज = लगभग 15.48 गज, 1 माथा

16 ओंस - 1 पौंड

14 पौंड - 1 स्टा

112 पौंड - 1 टन

2240 पौंड - 1 टन

---

1 गीला = 4.5 लीटर

1 लीटर = 1.8 फी

8 स्त्री = 1 माथा

12 माथा = 1 ताला

5 ताला = 1 छटाक

16 छटाक = 1 से

40 से = 1 मल

---

8 फी = 5 मी

12 इंच - 1 फुट

3 फुट - 1 गज

2240 गज = 1 मल

8 मल = 1 मल

4840 गज =

1 मल



3/6	- 3 मास	318 दिन
6/10	- 6 मास	
4/2	- 4 मास	6 दिन
10/8	10 मास	24 दिन
9/6	9 मास	18 दिन
11/4	11 मास	12
10/2	10	6
<del>6/3</del> 5/4	5 मास	6
1/2	12	

शकल 11 से कृष्ण 26  
 कृष्ण 6 से कृष्ण 10 - मध्य  
 शकल 6 से शकल 6 - मध्य  
 6, 10, 7, 18, 16, 9,  
 17, 9, 20

$$4p + 2$$

$$4p + 50^2$$



५ राशि, गृह, लग्न, दिक्मान, राशि में ~~अवस्था~~ भास

~~भाव चक्र~~

१२ राशि, गृह, लग्न, दिक्मान, राशि में ~~अवस्था~~ भाव चक्र,  
अग्निवास, गण्डमूल, धरती सोती, जस्वले, पंचमा, जन्म कुण्डली में गृह -  
२६, गृहस्थ, ~~अवस्था~~, गृह-अवस्था, ~~अवस्था~~, गुप्त वस्तु, काल मुख, वस्तु  
विचार, पांच संबंध सिद्ध, मूर्त, अक्षित वस्तु नई का विचार, स्त्री जातक विचार,  
विषकन्या योग, माला योग, शरीर, तिला, धूप का समान, शनि विचार,  
विवाह, गुरा हि उत्तर विचार, गृह विचार, ~~गृह, शरीर, शरीर~~  
~~अवस्था, अक्षित, अक्षित~~ पत्र, यात्रा

कार्तिक १ - ३

मागशीर्ष १ - ५

६, १०, १६, १६, १६, १७, २०

(205)



P 26 Completely  
Stem

गणेशाय नमः । जगदीशाय

ॐ श्री